मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आयोजित

आंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन

उज्जैन उपलब्धि

भारत सरकार

एवं

राष्ट्रीय संगठनो का

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को

पूर्ण समर्थन ।

साबरमती गुरुकुलम् को राष्ट्रीय सन्मान

मरुधर पत्रिका

28 वर्ष

वर्ष - 29 अंक - 49 जोधपुर दिनांक 19 अप्रैल 2018 प्रति गुरुवार संपादक-लालचन्द जैन मो. 9982620996 फोन : 2623996

उज्जैन में अंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का आयोजन

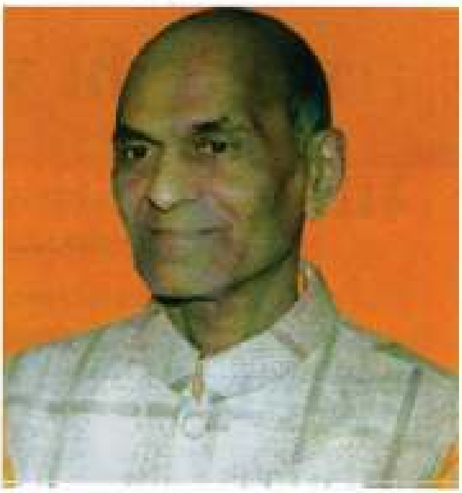

उज्जैन। आधुनिक अनर्थकारी मेकाले शिक्षा का प्रभावशाली विकल्प ''साबरमती गुरुकुलम्'' (हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला) की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ऐतिहासिक सफलता की है। अब यह उज्जैन में अंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का आयोजन करने जा रही है। दिनांक 28-29 व 30 अप्रेल 2018 को महर्षि सांदीपनि वेद प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) में आयोजित इस विराट गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का उद्घाटन माननीय डॉ. मोहनराव भागवत : सर संघचालक - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) द्वारा किया जायेगा। सम्मेलन के संरक्षक माननीय प्रकाशजी जावडेकर : मानव संसाधन विकास मंत्री - शिक्षा मंत्री - भारत सरकार हैं।

उल्लेखनीय है कि मूल बेड़ा (राजस्थान) निवासी एवं हाल साबरमती, अहमदाबाद में रहने वाले श्री उत्तमभाई जवानमलजी शाह ने आधुनिक शिक्षा की भयंकरता एवं आर्य शिक्षण की कल्याणकारिता के विषय में सद्गुरुदेवों के द्वारा मूल्यवान मार्गदर्शन प्राप्त किया। 25 वर्ष पूर्व पहले अपने और अपने भाईयों के परिवार के 11 पुत्र-पुत्रियों को घर में ही रखकर आर्य-प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया। उसमें सफलता प्राप्त हुई, तो एक कदम आगे बढ़कर वर्षों तक सिद्धाचल-वाटिका (साबरमती) में अपने घर में 25-30 बच्चों को गुरुकुल शिक्षा पद्धति के अनुसार निःशुल्क प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया। साबरमती में 1 एकड़ जमीन में आज से 9 वर्ष पूर्व जब यह निवासी गुरुकुलम् मात्र 13 विद्यार्थियों के साथ प्रारंभ हुआ था, तब इसके वर्तमान स्वरूप की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। आधुनिक स्कूली व्यवस्था के श्रेष्ठ विकल्प के रूप में इस बहुलाभकारी संस्था की उत्तरोत्तर बढ़ोतरी हुई है और विश्व मंच पर इसकी विशिष्ट पहचान बन गई है।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आयोजित

आंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन

उज्जैन उपलब्धि

भारत में स्वर्णयुग का अरुणोदय

।। गुरुकुलम् ।।

प्रकाशक - संपर्क सूत्र

संचालक - अखिल उत्तमभाई शाह - 7874846715

संपर्क - 9898099066, 8866020402, (079) 27501944, 7046186517

/gurukulamshiksha +91-7046435144 gurukulamshiksha

www.gurukulamshiksha.org info@gurukulamshiksha.org

प्रकाशन तिथि : कार्तिक सुद-१, वि.सं. २०७५, दिनांक : ८-११-२०१८

देशभर में अनेक नये गुरुकुलों को शुरु करने के कार्य मे सार्थक कदम

गुरुकुलों को सरकारी मान्यताका प्रारंभ

N.I.O.S. (नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलींग) में भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत सभी गुरुकुलों को समाहित किया जाये गा । जिसमें ११ विषयों का पाठ्यक्रम तय किया गया हैं । जिसमें से ५ विषयों का पाठ्यक्रम तैयार हो चूका है । आनेवाले वर्ष से ५ विषयो में परीक्षा शुरु हो जायेगी, अन्य ६ वविषयों के पाठ्यक्रम बनने की प्रक्रीया में हैं। कुल ११ विषयों में से ५ विषयों का चयन करके परीक्षा देनी होगी ।

अलग-अलग परंपराओं एवं पद्धतिओं से चल रहे
सभी गुरुकुलों को स्थान दिया गया है ।
अध्ययन एवं अध्यापन के लिए सारे गुरुकुल स्वतंत्र रहेंगे ।
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से चल रहे गुरुकुलो के लिये
यह बहुत बडी सिध्दि है ।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत N.I.O.S. (नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलींग)ने साबरमती गुरुकुलम् को अध्ययन केन्द्र के रुप में समग्र भारत में प्रथम केन्द्र प्रदान किया है।

"हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला नामक यह 'गुरुकुलम्' अभी तो छोटे कोरे कागज पर लिखा भारत के मानचित्र के समान है। आने वाले दिनों में इस गुरुकुल का जब व्यापक विस्तार होगा, तब इसके भीतर दिखेगा समग्र भारत वर्ष अर्थात् 'जगद्गुरु' भारत वर्ष।"

- मनोज ज्वाला
पत्रकार व लेखक
(रांची झारखंड)

प्रस्तावना

हमारी भारतीय आर्यपरंपरा में विद्या प्राप्ति की मुख्य व्यवस्था के रुप में गुरुकुलम् एवं पाठशालाए केन्द्र स्थान पर थे । आज से २०० वर्ष पहले तक जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा भारत में दी जाती थी, वैसी विश्व के किसी भी देश में नहीं दी जाती थी । अंग्रेजो के आगमन से पहले शिक्षा ओर विद्या के क्षेत्र में भारत दुनिया के देशो में सबसे अग्रणी था । मनुष्य के आंतरिक गुणो को उजागर करके उसके दोषों का निर्मूलन करने वाली महान भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणों का कुठाराघात सहना पड़ा ।

ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुन:जीवित किये बीना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असंभव है । अत: इस परंपरा को पुन:प्रस्थापित करना अति आवश्यक है । तभी, मैकाले शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारी आज जो दुर्दशा हुई है, उस से हम भारत को बचा पायेंगे ।

साबरमती गुरुकुलम् का लक्ष्य गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को
देश की मुख्य धारा की शिक्षा बनाने का है ।

२५ साल पूर्वे पिताजी द्वारा घर के ही बच्चों से शुरु कीया गया यह गुरुकुलम् आज अनेक नये गुरुकुलो के शुभारंभ हेतु प्रेरक और मार्गदर्शक बन गया है । साबरमती का गुरुकुल एक आंदोलन व क्रांति का स्वरुप अखत्यार कर चूका है ।

इस संदर्भ में उज्जैन में दिनांक २८ से ३० अप्रेल २०१८ को आयोजित त्रि-दिवसीय आंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन एक ऐतिहासिक घटना है । इस संम्मेलन की फलश्रुति को प्रस्तुत करनेवाली यह पुस्तिका आपको गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की भव्यता और भारत के उज्ज्वल भविष्य का निर्देश देगी ऐसा हमे विश्वास हैं ।

- अखिल उत्तमभाई शाह
संचालक -साबरमती गुरुकुलम्

साबरमती गुरुकुलम् की

ऐतिहासिक सफलता

उज्जैन में आंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल संमेलन

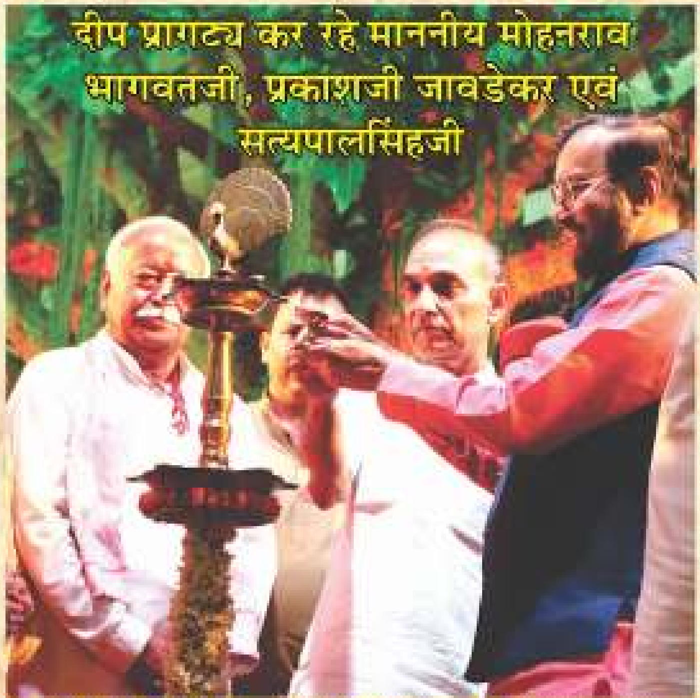

दीप प्रागट्य कर रहे माननीय मोहनराव भागवतजी, प्रकाशजी जावडेकर एवं सत्यपालसिंहजी

भारत सरकार
एवं
राष्ट्रीय संगठनो का गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पूर्ण समर्थन ।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी के उद्बोधन के अंश

शताब्दीओ से ज्ञानगंगा जहां चली है उस भूमि के हम लोग है । आज शिक्षा को और सार्थक बनाना है ।

गुरुकुल से आए छात्रो से मैंने कुछ छात्रों से बात भी की और मैने पुछा की क्या पढाते है । उन्होंने कहाँ गुरुकुलो में प्राचीन एवं अर्वाचीन विद्या का अच्छा समन्वय हो रहा है । एक गुरु के पास ८ या १० छात्र है उनका सर्वांगीण विकास हो वह उनका उद्देश्य है । और सभी की जो विशेषता है उसको प्रोत्साहन देकर और हरेक की जो जरुरत है उसको पुरा करते हुए एक सार्थक शिक्षा का यह अभिनव प्रयोग है इस का भी शिक्षा पद्धति में स्थान रहेगा ये में कहना चाहता हुं ।

वेद पाठियों को भी मिलेगी बोर्ड के समकक्ष मान्यता

श्री मोहनराव भागवतजी

मा. सरसंघचालक श्री - आर. एस. एस.

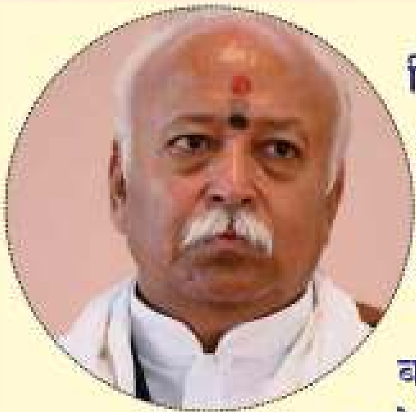

शिक्षा स्वायत्त और समाज आधारित होना चाहिए । सरकार उसका पोषण करे और बाधाओं को दूर करने का काम करे, यह व्यवस्था श्रेष्ठ है ।

गुरुकुल पद्धति ही एकमात्र पद्धति है, जहां की शिक्षा मानव के संपूर्ण विकास पर केंद्रित होती है । इसलिए खाका तैयार कर इस क्षेत्र में ठोस प्रयास करने की जरूरत है ।

गुरुकुल की जरुरत पर चर्चाए हो चुकी । अब हमे तय करना है कि क्या करें ?

हमे करना है, हम करेंगे ।

श्री शीवराज सिंहजी चौहान

मा. मुख्यमंत्री श्री - मध्यप्रदेश

प्रदेश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की जाएगी । इसे औपचारिक शिक्षा के समकक्ष माना जाएगा ।

इंदौर के पास जानापाव तीर्थ में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा गुरुकुल स्थापित किया जाएगा ।

गुरुकुल पद्धति को अपनाने के बाद भारत विश्व को राह दिखाएगा ।

श्री सत्यपाल सिंहजी

मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री (शिक्षा मंत्री)

यह विराट आयोजन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ओर ऋषि परंपरा का सन्मान है। गुरुकुल पद्धति हमारी परंपरा और आदर्शों का सम्मान है।

देश में अपराध, जातिवाद और आतंकवाद बढ़ता जा रहा है । उसको समाप्त करने के लिए हमें शिक्षा में परिवर्तन करने होंगे और गुरुकुल शिक्षा पद्धति को अपनाना होगा ।

बाल्यकाल में ही बच्चों को गुरुकुल में भेजना चाहिए ।

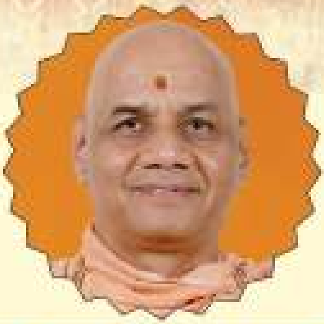

स्वामी गोविंददेवगिरी महाराज के आशीर्विचन

आज का दिन भारत के भावि इतिहास मेंसुवर्ण अक्षरों से लिखा जायेगा इसके बारे में मुजे कोई भी आशंका नहीं है।

आज इस सम्मेलन के रूप में ऐतिहासिक कार्य का शुभारंभ हो रहा है।

यह राष्ट्र जिस परंपरा का संवाहन करता आया उस परंपरा को एक बहुत बडा धक्का पिछली शताब्दी में मेकोले ने और मेक्सपुलर ने मिल कर के दीया और मेक्सपुलर ने लीखा India has been conquered once it must be conquered again and second conquered must be through education.

आज हम एक दुसरी घोषणा करने के लिये आये है।

India has been independent once but it must be indipendent again and second independence must be through education.

शिक्षा के माध्यम से ही हम दूसरी स्वतंत्राता प्राप्त करना चाहते है।

स्वामी संवितसोमगिरी महाराज के आशीर्विचन

आज एक मंच पर विराट गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन हुआ है, यह विश्व को बहुत कुछ देने का शंखनाद हुआ है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सहसरकार्यवाह श्री सुरेशजी सोनी

आज के समय में संस्कार युक्त शिक्षा की जरूरत है। यही मनुष्य के जीवन को आदर्श बनाने वाली है और यह गुरुकुल शिक्षा से ही प्राप्त होगी।

मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव मनोज श्रीवास्तव

गुरुकुल शिक्षा सिर्फ जीवन का अंग नही है बल्कि स्वयं में जीवन है।

राष्ट्रवादी चिंतक एवं वरिष्ठ शिक्षाविद

मा. मुकुलजी कानिटकर

(अखिल भारतीय संगठन मंत्री - भारतीय शिक्षण मंडल)

(प्रचारक - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

वर्ल्ड एज्युकेशन समिट - २०१७ में
दिनांक ११-१२, अगस्त २०१७

मैं कहता हूं कि इस देश का नहीं, विश्व का भविष्य गुरुकुल शिक्षा है ।
आई.आई.टी में गुरुकुल की मेथेडॉलोजी शुरु होगी क्योंकि यही एक मात्र शिक्षा है ।

ZEE NEWS में दिनांक ११-६-२०१७ रविवार को TRANSFORMING INDIS कार्यक्रम में कहा

भारत में एक बहुत बड़ी क्रान्ति शुरु हुई है कि गुरुकुलों का पुन: प्रस्थापन युगानुकूल रूप में हो रहा है ।
क्योंकि जहाँ पर सर्वांगीण और समग्र शिक्षा मिलेगी वही पर बच्चा आगे जाएगा ।
जब तक समाज शिक्षा का दायित्व अपने हाथ में नही लेता, सरकार चाहकर के भी परिवर्तन नहीं कर सकती ।

पाञ्चजन्य

१३ मई २०१८
पृष्ठ संख्या १९

अंतरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन के बाद गुरुकुल शिक्षा विश्व में मुख्य धारा की शिक्षा बनेगी ।

जैसे योग की अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर छवि का निर्माण हुआ इसी तरह गुरुकुल शिक्षा भी पुनर्स्थापित होगी ।

અભિયાન

મોરેશિયસ, સાઉથ આફ્રિકા, વેસ્ટ ઇન્ડિઝ, ટ્રિનિદાદમાંથી ગુરુકુલ ખોલવાની માંગ છે. દુનિયામાં ફરીથી ગુરુકુલ શિક્ષણની મુખ્ય ધારા બનવાની સંભાવનાઓ જોવાઈ રહી છે.

विराट गुरुकुल संमेलन में मंथन के निष्कर्ष से ये तय हुए संकल्प

भगवान श्री कृष्ण की शिक्षा भूमि के रूप में विख्यात पवित्र अवतिका अर्थात् उज्जैन नगर में हुए गुरुकुल सम्मेलन में हम सहभागी रहे। शिक्षा को लेकर हुए विचार विमर्श के उपरांत यह संकल्प करते है...

- प्राचीन काल से समर्थ स्वावलंबी समाज निर्माण करने वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहन देने मन,वचन व कर्म से क्रियाशील रहेंगे।
- अपने क्षेत्र में संचालित गुरूकुलों को समाज पोषित एवं स्वावलंबी बनाने में योगदान देंगे।
- गुरुकुल शिक्षा को युगानुकूल एवं देशानुकूल बनाने के लिए प्रारूप बनाने का कार्य करेंगे।
- आधुनिक शिक्षा संस्थानो में गुरुकुल शिक्षा के तत्व, वैज्ञानिक शिक्षण पद्धति, संस्कारक्षम वातावरण निर्मित करने व्यक्ति गत तथा संस्थागत स्तर पर कार्य करेंगे।
- नवीन गुरुकुलो की स्थापना के लिए भूमि एवं अन्य संस्थाधन उपलब्ध कराने उदारमना दानदाताओं को प्रेरित करेंगे।
- व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर उन्हें समाज एवं राष्ट्रोपयोगी नागरिक बनाने वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में अपने बालक-बालिकाओं को प्रवेश दिलाने अभिभावको को प्रेरित करेंगे।
- गुरुकुल शिक्षा के इस ज्ञानयज्ञ में अपनी सेवाएं समर्पित करने विभिन्न आचार्यो को प्रेरित करेंगे।
- समाज और मानवता का कल्याण करने वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयामों पर शोध करने एवं कराने शोधार्थी एवं शिक्षाविदों को प्रोत्साहित करेंगे।
- गुरुकुल के संचालन में आने वाली प्रशासनिक बाधाओं को न्यूनतम करते हुए समकक्षता आदि सुविधाएं प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

उज्जैन में आयोजित आंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन में साबरमती गुरुकुलम् का सन्मान

पू. गोविंददेवगीरीजी महाराज द्वारा
सन्मान स्वीकार कर रहे
श्रीमती शकुंतलाबेन उत्तमभाई शाह

पू. गोविंददेवगीरीजी महाराज
एवं माननीय मुकुलजी कानीटकर
के साथ गुरुकुलम् परिवार

सम्मेलन में उद्‌बोधन कर रहे
गुरुकुलम के अध्यक्ष
श्री अनिलभाई दलपतभाई शाह

सम्मेलन में उपस्थित मंचस्थ
महानुभावो के साथ पुस्तक विमोचन कर रहे
श्री अनिलभाई दलपतभाई शाह

उज्जैन संमेलन के दौरान श्री गोविंददेवगीरीजी महाराज एवं श्री संवित सोमगीरीजी महाराज का तत्काल चित्र सर्जन कर के सर्मापित कर रहें साबरमती गुरुकलम् के छात्र

उज्जैन संमेलन में आदर्श विद्यार्थी के विषय में सभाजनों को संबोधित कर रहें साबरमती गुरुकलम् के छात्र वत्सल अमितभाई शाह

उज्जैन संमेलन में विविध प्रस्तुति कर रहें साबरमती गुरुकलम् के छात्रगण

उज्जैन संमेलन में वैदिक गणित की प्रस्तुति कर रहें साबरमती गुरुकलम् के छात्रगण

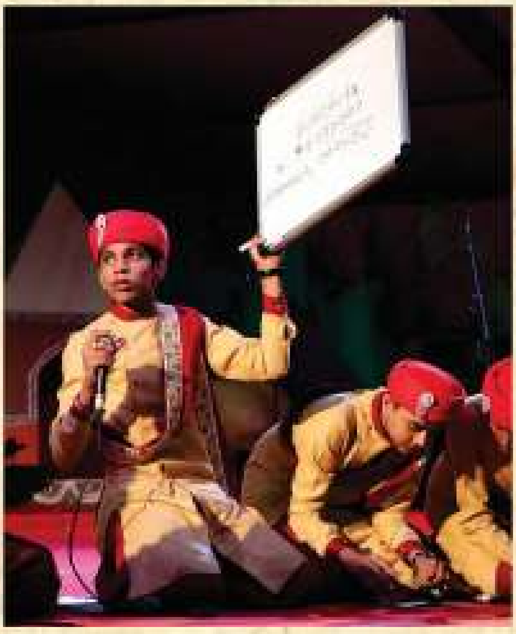

उज्जैन संमेलन में मलखम् की प्रस्तुति कर रहें साबरमती गुरुकलम् के छात्रगण

उज्जैन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन में **साबरमती गुरुकुलम् के छात्र मनीष चौहाण (उम्र १३ वर्ष)** द्वारा बनाये गये चित्र से प्रभावित होकर चित्र पर हस्ताक्षर करते हुए केंद्रिय मानव संसाधन विकास मंत्री **(शिक्षा मंत्री) श्री प्रकाश जावडेकरजी ।**

प्रांतीय, राष्ट्रीय एवं आंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों में प्राचीन आर्य - शिक्षा पद्धति को मिली स्वीकृति

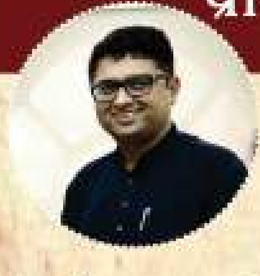

- आचार्य डॉ. दीपक कोइराला

एशोसिएट प्रमुख (गुरुकुल प्रकल्प - भारतीय शिक्षण मंडल)

प्राचीन गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली के अध्ययन व संशोधन के लिये मुझे देशाटन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस देशाटन के दौरान मेरी ''गुरुकुलम्'' पद्धति से प्राचीन आर्य शिक्षा देनेवाली देश की कई प्रमुख स्वायत्त संस्थाओं तथा प्राचीन शैक्षणिक-परम्पराओं, पद्धतियों और मान्यताओं के साथ कार्य करनेवाली अनेक संस्थाओं, संघों, संगठनों, संतों, महंतों, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं से मुलाकात हुई। सरकार के शिक्षा सचिव, शिक्षामंत्री, शिक्षकों, प्राध्यापकों आदि के साथ भी विचार-विमर्श के लिये बैठकें हुईं। अनेक राष्ट्रवादी संगठनों, शिक्षा एवं संस्कारों के आदर्शों को समर्पित तथा इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर संघर्षरत दूर-सुदूर के अनेक क्षेत्रों में कार्यान्वित सेवाभावियों से भी मेरी ''गुरुकुलम्'' के विषय में चर्चा हुई।

समग्र देश के अनेक धर्माचार्य संतों-महंतों के अलावा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक **डॉ. मोहनराव भागवतजी**, योगाचार्य बाबा **पू. रामदेवजी महाराज**, विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महासचिव **डॉ. प्रवीण तोगड़ियाजी**, समाजसेवक **श्री अण्णा हजारेजी**, विद्वान **डॉ. वेदप्रताप वैदिकजी**, **श्री विनीत नारायणजी** आदि के साथ भी मेरी ''हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम्)'' की शिक्षा पद्धति के बारे में चर्चा हुई।

> **प्रायः लुप्त हो रही प्राचीन शिक्षा-प्रणाली, ज्ञानपीठों तथा विद्याधामों को पुनर्जीवित करके तेजस्वी सूर्योदय की लालिमा से दिव्य ज्ञान की सुनहरी किरणों को चहुं ओर फैलाकर राष्ट्र को ज्ञानदाता भारत बनाने का स्वप्न अब साकार होता दिखाई दे रहा है।**

सभी ने 'गुरुकुलम्' की प्राचीन शैली की शैक्षणिक गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिये तथा संस्था में प्रत्यक्ष पधारकर हमारे प्राचीन शिक्षा के महायज्ञ में यथासंभव सहयोग देने की सद्भावना भी व्यक्त की।

प्राचीन शिक्षा के इस ज्ञानयज्ञ में राष्ट्रीय संघ, संत, महंत, शिक्षाविद् एक मंच पर एकत्र होकर नया पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों का नवीनीकरण, ''गुरुकुलम शिक्षा बोर्ड'' आदि नीति संबंधी सिद्धांतों का विचार-विमर्श करने के लिये विविध स्थलों पर एकत्र हो रहे हैं। इसी संदर्भ में निम्नलिखित विवरण द्रष्टव्य है।

(१) दिनांक २५ व २६-११-२०१४ को नागपुर में ''विद्वत् गोष्ठि'' के दौरान प.पू. सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवतजी के सान्निध्य में लगभग ३५० शिक्षाविदों, संचालकों व पत्रकारों के समक्ष ''भारतीय शिक्षा पद्धति'' के संबंध में ''गुरुकुलम्'' की चर्चा हुई।

(२) दिनांक ३ से ५-०१-२०१५ के दौरान ''दास्तान फार्म हाउस'' नरोड़ा-अहमदाबाद में लगभग डेढ़ लाख लोगों के विशाल जन-समुदाय की उपस्थिति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के करीब २५,००० कार्यकर्ताओं का बड़े स्तर पर प्रशिक्षण हुआ। इसमें ''गुरुकुलम्'' के साहित्य-प्रचार का स्टॉल रखा गया। इसके माध्यम से बड़े पैमाने पर जन-समुदाय के बीच हमारी संस्था का प्रचार हुआ।

(३) दिनांक १८ से २५-०१-२०१५ के दौरान कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में स्थित ''कणेरी मठ'' में प. पू. ध. धु. अदृश्यकाल सिद्धेश्वर स्वामीजी के सान्निध्य में भारत विकास संगम द्वारा आयोजित ''भारतीय संस्कृति उत्सव'' में १८ से २० लाख का विशाल जन-समुदाय उपस्थित रहा।

इस अवसर पर ''भारतीय प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली'' विषय पर मेरा लगभग आधा घंटा प्रवचन हुआ। इस विषय में अनेक विचार-गोष्ठियां भी हुईं। 'गुरुकुलम्' की कार्यशैली से सामान्य जन ही नहीं अपितु स्वयं स्वामीजी भी अत्यंत प्रभावित हुए। परिणामस्वरूप स्वामीजी स्वयं अहमदाबाद में हमारे 'गुरुकुलम्' पधारे। उन्होंने इस 'गुरुकुलम्' से प्रभावित होकर स्वयं भी ऐसा 'गुरुकुलम्' स्थापित करने का निर्णय किया।

(४) दिनांक ०५-०२-२०१५ को ''गुरुकुलम्'' में देश के सभी संघ-संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में ''विचार-गोष्ठि'' आयोजित हुई। इसमें विद्वानों-विशेषज्ञों की ओर से सर्व-सहमति से ''प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली'' के विस्तार हेतु संतों व शासकों के ध्रुवीकरण के लिये हमारी संस्था ''गुरुकुलम्'' को संयोजक के रूप में उत्तरदायित्व सौंपा गया। इसका मुख्य उद्देश्य समग्र देश में हो रहे स्वायत्त शैक्षणिक प्रयोगों अर्थात् गुरुकुलम् जैसी संस्थाओं का संयोजन करके उन्हें ''एकसूत्रता'' में पिरोना (संगठित करना) है।

(५) दिनांक ३०-३-१५ को भारतीय नवीन शिक्षा नीति की समीक्षा के लिये सर्वप्रथम बैठक ''गुरुकुलम्'' में आयोजित हुई। इसमें समग्र देश से लगभग ३०० कुलपति, प्राध्यापक, शिक्षा-विद् एवं चिंतक उपस्थित रहे।

(६) दिनांक ०२ से ०६-०६-२०१५ के दौरान गुरुकुलम् में **''दैशिक शास्त्र''** का शिविर आयोजित हुआ। इसमें समग्र देश से लगभग ५० कार्यकर्ता उपस्थित रहे। माननीय श्री ज.र.शा .साहब शिविर के प्रवक्ता थे।

(७) दिनांक १३ से २१-०८-२०१५ के दौरान ''इन्दौर'' (मध्यप्रदेश) में आयोजित हुए **ज्योतिष सम्मेलन** में ''गुरुकुलम्'' के संयोजक तथा विद्यार्थी सम्मिलित हुए। इस संस्था के परिचय से जहाँ आमंत्रित महानुभाव मंत्रमुग्ध हुए। कार्यक्रम के दौरान ''गुरुकुलम्'' के विद्यार्थियों ने विभिन्न कलाओं की प्रस्तुति दी।

(८) दिनांक ०१ से ०८-०९-२०१५ के दौरान **''नासिक कुंभ मेले''** में अनेक संतों व दर्शनार्थियों के समक्ष ''गुरुकुलम्'' का विवरण प्रस्तुत किया गया। इस दौरान प्रचार-प्रसार तथा साहित्य वितरण भी किया गया।

(९) दिनांक २३ व २४-०९-२०१५ को महाराष्ट्र में नासिक शहर के **शंकराचार्य भवन में संतों-महंतों की उपस्थिति में शिक्षा-ज्ञानयज्ञ आयोजित हुआ**। इसमें ''गुरुकुलम्'' के विषय में विचार - प्रस्तुत किया गया।

(१०) दिनांक ०२ से ०४-०९-२०१५ के दौरान बीजापुर (कर्णाटक) में **भारत विकास संगम द्वारा ऐसे २०० व्यक्तियों का संकलन किया गया जो विभिन्न क्षेत्रों के कुल लगभग ८ करोड़ लोगों का नेतृत्व संभालते हैं।** इन २०० अग्रगण्य व्यक्तियों के समक्ष ''गुरुकुलम्'' शिक्षा पद्धति के विषय में विचारों की प्रस्तुति की गई।

(११) दिनांक २१ से २५-१२-२०१५ के दौरान **असम-पश्चिम बंगाल-सिक्किम को केन्द्र में रखते हुए पर्वतीय महोत्सव (Mountain Festival)** का आयोजन किया गया था। इसमें मुझे ''गुरुकुलीय शिक्षा'' विषय पर मुख्य वक्तव्य देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(१२) दिनांक २० से २२-११-२०१५ के दौरान **ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में भारतीय शिक्षण मंडल की ओर से आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन का केन्द्रीय शिक्षामंत्री स्मृति इरानी ने उद्घाटन किया था।** इस अधिवेशन में समग्र देश से लगभग १५०० शिक्षाविद् उपस्थित रहे। इस अधिवेशन में ''गुरुकुलम्'' संबंधी साहित्य का वितरण किया गया।

(१३) दिनांक २३-०१-२०१६ को जालोर (राजस्थान) में **आदर्श विद्या मंदिर द्वारा आयोजित वार्षिकोत्सव में राजस्थान के शिक्षामंत्री माननीय प्रा. वासुदेव देवनानी, विधायक अमृताजी तथा अन्य कई विधायक, सांसद, शिक्षाविद् और जैन श्रेष्ठियों सहित लगभग २००० श्रोता उपस्थित थे।** इस अवसर पर राजस्थान में एक **गुरुकुल का निर्माण करने का आग्रह किया गया था।**

(१४) दिनांक २७ व २८-०२-२०१६ को ''गुरुकुलम्'' साबरमती-अहमदाबाद में **दो दिवसीय ''विद्वत् गोष्ठि''** का आयोजन किया गया था। इसमें लगभग ४५० प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बायें से प्रथम इन्दुमति बेन काटदरे - कुलपति पुनरुत्थान विद्यापीठ, द्वितीय मा. श्री रंगा हरी जी - बौद्धिक प्रमुख राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, तृतीय मा. श्री ओमप्रकाश कोहलीजी - राज्यपाल - गुजरात राज्य, चतुर्थ मा. श्री वंशराजजी भणशाली - मेनेजिंग ट्रस्टीश्री - साबरमती गुरुकुलम्, पंचम मा. श्री अनिलभाई दलपतभाई - अध्यक्ष - साबरमती गुरुकुलम्

(१५) श्री प्रकाश जावडेकरजी को साबरमती - गुरुकुलम् में पधारने हेतु सांगानेरी कागज पर हस्त लिखित आमंत्रण पत्र प्रस्तुत करते हुए संचालक श्री अखिल उत्तमभाई शाह, भारतीय शिक्षण मंडल के संगठन मंत्री श्री मुकुलजी कानिटकर एवं शिक्षा क्षेत्र के नामांकित विद्वानों की भारत सरकार के केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री (शिक्षामंत्री) श्री प्रकाशजी जावडेकर के साथ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का भारत वर्ष में विस्तार एवं पुनः प्रतिष्ठा हेतु शुभेच्छा मुलाकात...

(१६) उज्जैन में आयोजित अंतर्राष्ट्रिय विराट गुरुकुल संमेलन के विषय में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के साथ श्री मुकुलजी कानिटकर, अरुणाजी सारस्वत एवं साबरमती गुरुकल के आचार्य डॉ. दीपक भाई कोईराला की भेट ।

(१७) पूरे साल के दौरान देश के विभिन्न प्रांतो में एवं विशेष महानुभावों से गुरुकुलम् शिक्षा प्रणाली को मुख्यधारा में लाने हेतु प्रवास चलता रहा ।

(१८) विराट गुरुकुल सम्मेलन – उज्जैन के पूर्व आयोजन हेतु साबरमती गुरुकुलम् में गोष्ठी

उज्जैन में आयोजित विराट गुरुकुल सम्मेलन को सफल बनाने हेतु भारतीय शिक्षण मंडल को प्रांतीय की गोष्ठी का आयोजन साबरमती गुरुकुलम् में दिनांक २१-१-२०१८ के दिन सम्पन्न हुआ।

उस में भारत एवं नेपाल के सभी प्रांतों से १०० से अधिक संयोजक व सह संयोजक उपस्थित रहे थे । भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री मुकुलजी कानिटकरने उपस्थित सभी कार्यकर्ता को मार्गदर्शन किया।

(१९) चैन्नई में नूतन गुरुकुल की शुरुआत

चैन्नई में आयोजित साबरमती गुरुकुलम् के छात्रों के सांस्कृतिक कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर चैन्नई के उत्साही आगेवानों एवं कार्यकरों द्वारा नये गुरुकुल की शुरुआत हेतु प्रस्ताव मिलने पर गुरुकुल की शुभ शुरुआत हेतु शैक्षणिक व्यवस्था की जिम्मेवारी का निर्धारण हुआ।

चैन्नई के नूतन गुरुकुलम् में दिनांक ७-२-२०१८ के दिन १०० छात्रों का भव्य विद्यारंभ संस्कार संपन्न हुआ।

सभी छात्रों एवं अभिभावकों में अद्‌भुत आनंद एवं उत्साह प्रतित हुआ।

(२०) नेपाल एवं बर्मा में ''राष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन''

गुरुकुल शिक्षा को पुनः एक बार मुख्य धारा की शिक्षा बनाने के लिये नेपाल में 'राष्ट्रीय गुरुकुल संम्मेलन' का आयोजन हुआ । नेपाल शिक्षण परिषद ने मुझे इस सम्मेलन में संकलन एवं आयोजक की भूमिका का दायित्व दीया था । उस २२५ गुरुकुलों के प्रतिनिधि सामिल हुए ।

''साबरमती - गुरुकुलम्'' के छात्रों द्वारा सम्मेलन में वैदिक गणित प्रस्तुत किया गया ।

नेपाल के अग्रणी अखबारों एवं न्यूज चेनलो ने भी इस संमेलन को विशेष महत्त्व दिया ।

बर्मा में ७०० से अधिक लोगों एवं ५० से अधिक विद्यार्थी की उपस्थिति में राष्ट्रीय गुरुकुल संम्मेलन भी संपन्न हुआ ।

बर्मा सम्मेलन की झलक

नेपाल सम्मेलन की झलक

देश के विभिन्न प्रांतो में चल रहे १००० से ज्यादा गुरुकुल एवं नेपाल, भूटान, बर्मा, इन्डोनेशिया इत्यादि देशों में चल रहे गुरुकुलों के एक अंतर्राष्ट्रिय विराट गुरुकुल संम्मेलन का दिनांक २८-२९-३० अप्रेल २०१८ को उज्जैन में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन का मुख्य हेतु गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को युगानुकूल रूप में पुन:प्रस्थापित करके इस शिक्षा व्यवस्था को मुख्यधारा में लाना है। इस सम्मेलन में मुझे एसोशिएट प्रमुख के रूप में दायित्व दिया गया है।

अनेक संप्रदाय व समाज के हितचिंतक दार्शनिक लोग मतभेदों से परे रहकर गुरुकुलीय शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के लिये ''गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति'' को स्वीकार करके एक मंच पर एकत्र हुए और एक राष्ट्रव्यापी कार्य के लिये कटिबद्ध हुए हैं। इसका हमें अंत:करण से अनूठा आनंद हुआ है।

भारत के पुनरुत्थान की सुगबुगाहट का आख्यान

खबर है कि आगामी अप्रैल महीने में महाकाल की नगरी उज्जैन में एक ऐसा अद्भुत कार्यक्रम सम्पन्न होने जा रहा है जिससे देश-दुनिया के लोग पृथ्वी के सर्वाधिक पुरातन-सनातन राष्ट्र भारतवर्ष को परम वैभव का अभीष्ट सिद्ध करने के निमित्त भारतीय पैरों पर पुनः खड़ा हो उठने का बौद्धिक उद्यम करते देख सकेंगे। भारत के पुनरुत्थान हेतु आयोजित होने वाले उस तीन दिवसीय बौद्धिक उद्यम की सुगबुगाहट सुनाई पड़ने लगी है जो वास्तव में भारत की भवितव्यता के आकार लेने की आहट है। जी हां! वही भवितव्यताएं जिसे महर्षि अरविन्द व युग ऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य ने चेतना के सर्वोच्च स्तर पर जाकर अपनी-अपनी दिव्य-दृष्टि से काल के भावी प्रवाह का अवलोकन कर वर्षों पूर्व ही उद्घाटित कर रखा है कि 21वीं सदी का प्रथम दशक बीतने के साथ ही भारतीय ज्ञान-विज्ञान का नवोन्मेष आरम्भ हो जाएगा और फिर आने वाले दशकों में भारत अपनी समस्त सांस्कृतिक-आध्यात्मिक समग्रता के साथ सारी दुनिया पर छा जाएगा तथा सम्पूर्ण विश्व-वसुधा का नेतृत्व करेगा। तो भारतीय ज्ञान-विज्ञान के उत्कर्ष-उन्नयन के जो मूल स्रोत मैकाले शिक्षा-पद्धति की भीषण व्याप्ति और स्वातंत्र्योत्तर भारत की पश्चिमोन्मुख शिक्षा-नीति के कारण ओझल हो चुके हैं।

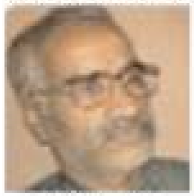
मनोज ज्वाला

भारत सरकार के केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संरक्षण में होने वाला यह वह आयोजन है जिसमें देशदुनिया में अब तक बचे-खुचे अथवा नये खुले भारतीय गुरुकुलों का महासम्मेलन जिसमें भारत की उस महान प्राचीन शिक्षा-पद्धति के आधुनिकीकरण, वैधानिकीकरण व वैश्वीकरण के बाबत शासनिक सूत्र-समीकरण तैयार किये जाएंगे जो पद्धति अंग्रेजों द्वारा अवैध करार दिए जाने के कारण निस्तेज हो कर अप्रासंगिक हो चुकी थी। इस हेतु उस कार्यक्रम में लगभग 1200 गुरुकुलों के संचालक, विद्यार्थी व उनके अभिभावक और गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति के चिन्तक-विचारक-विद्वत लोग भाग लेने वाले हैं। है न अद्भुत कार्यक्रम! अद्भुत ही नहीं, ऐतिहासिक भी है यह आयोजन क्योंकि उससे भारत की नयी पीढ़ियों की दशा-दिशा तय करने के बाबत शिक्षा की उस भारतीय रीति-नीति-पद्धति को शासनिक आकार दिए जाने का प्रारुप निर्धारित होगा, जिसकी अपेक्षा 15 अगस्त 1947 के बाद से ही देश के राष्ट्रवादी चिन्तकों व सांस्कृतिक संगठनों की ओर से की जाती रही है, किन्तु सरकार द्वारा इसकी उपेक्षा ही होती रही थी।

भारत के योग-अध्यात्म विज्ञान से मनुष्य अपनी चेतना का विकास कर के सभी कोषों पर विजय प्राप्त कर सकता है। ऋषि-द्वय ने उपरोक्त सातों कोषों के पूर्ण विकास को लक्ष्य कर वेद-विदित ज्ञान के आलोक में धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-लक्षी चतुष्पदी शिक्षा का वैज्ञानिक दर्शन प्रस्तुत कर बताया कि इस प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति से व्यक्ति अपनी चेतना के विकास की सुपर माइण्ड व सुपर मैन अथवा सुपरचेतन अवस्था प्राप्त कर न केवल तमाम भौतिक उपलब्धियां हासिल कर सकता है बल्कि दैवीय शक्तियों से भी ओत-प्रोत हो सकता है। इन दोनों ऋषियों ने चेतना के सर्वोच्च स्तर से देश-दुनिया की भवितव्यताओं को अपनी-अपनी दिव्य-दृष्टि द्वारा देख रामकृष्ण परमहंस के जन्मोपरान्त 175 साल की अवधि को युगसंधि-काल बताते हुए उसके समाप्त होते ही परमात्म-सत्ता की योजनानुसार भारत के सर्वांगीण पुनरुत्थान की बहुविध गतिविधियों के परिणाम आने और आगामी कुछ ही दशकों के पश्चात सनातन धर्म-आधारित भारतीय ज्ञान-विज्ञान को वैश्विक विस्तार मिलने की घोषणा कर रखी है।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह ध्यातव्य है कि वर्ष 2011 में उस संधि-काल की वह अवधि समाप्त हो चुकी है जिसके बाद से भारत में राजनीतिक और विविध-विषयक परिवर्तनों का अभियान सा चल पड़ा है। यहां की योग-विद्या के वैश्विक विस्तार को गति मिलने के बाद अब अभारतीय औपनिवेशिक शिक्षा-पद्धति की विदाई के लिए प्राचीन भारतीय गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति की पुनर्प्रतिष्ठा का आयोजन होने जा रहा है। आगामी 28 से 30 अप्रैल तक उज्जैन के महर्षि सांदीपनि वेद-विद्या प्रतिष्ठान में प्रस्तावित उस कार्यक्रम का आयोजन भारतीय शिक्षण मण्डल नागपुर और संस्कृति मंत्रालय मध्यप्रदेश सरकार के द्वारा संयुक्त रुप से होने वाला है। तीन दिनों के उस पूरे कार्यक्रम की रचना इस तरह से की गई है कि उसमें आधुनिक भारत की राज-सत्ता से अब तक उपेक्षित रही प्राचीन भारतीय गुरुकुलीय शिक्षा को भारत की मुख्य धारा की शिक्षा-पद्धति में तब्दील करने की पूर्व-पीठिका तैयार हो जाए ताकि उसके आधार पर केन्द्र व राज्य की सरकारें नयी शिक्षा नीति का निर्धारण कर सकें। भारत के पुनरुत्थान को शासनिक आकार देने के बाबत सुनियोजित उस गुरुकुल-सम्मेलन के सफल आयोजन हेतु वेद-विदित शिक्षा-दर्शन से युक्त देश-विदेश के 15 गुरुकुलों की एक समिति बनायी गई है। किन्तु उस पूरे कार्यक्रम का उत्प्रेरक आख्यान अहमदाबाद के साबरमती-स्थित हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला नामक गुरुकुलम से जुड़ा हुआ है, जो प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति की एक ऐसी अभिव्यक्ति है जहां बच्चों को महामानव और अतिमानव बनाने का प्रयोग चल रहा है। उसके संचालक उत्तमभाई के अनुसार वहां बच्चों को डिग्री-मुक्त शिक्षा के साथ जीवन जीने की विविध कलाओं और आत्मा के उन्नतर विकास की विशिष्ट विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। शुद्ध-अन्न-जल-दुग्ध-घृत-वनस्पति-औषधि-युक्त सात्विक भोजन से निर्मल चित्त, शुद्ध मन व प्रखर बुद्धि-विवेक-विचार-सम्पन्न व्यक्तित्व-निर्माण का एक ऐसा प्रकल्प है वह गुरुकुलम जिसके समक्ष हमारे देश की पश्चिमी अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति अत्यंत खोखली व एकांगी प्रतीत होती है। वहां बच्चे भाषा-साहित्य गणित-फलित-इतिहास-भूगोल व विज्ञान में ही नहीं, बल्कि वेद-उपनिषद, स्मृति-पुराण, योग-सांख्य, गीता-वेदांत, ज्योतिष-वास्तु, कृषि-गोपालन, संगीत-नृत्य, भाषण-प्रवचन में भी पारंगत हैं। वहां के बच्चों को पढ़ाया नहीं जाता है। बल्कि उनके भीतर की प्रतिभा-क्षमता-चेतना को उभारा जाता है। शिक्षा की वही सर्वोत्कृष्ट पद्धति है कि बच्चों के मन-मस्तिष्क पर ऊपर से ज्ञान थोपा न जाए। उनके भीतर भरे-पड़े ज्ञान के बीज को पल्लवित-पुष्पित होने दिया जाए। वहां यही होता है-योग-व्यायाम, खेल-मलखम्ब, घुड़सवारी-तीरंदाजी विषयक विविध विस्मयकारी करतब करते रहने वाले और गणित की अनेक राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएं जीतने का कीर्तिमान स्थापित कर लेने वाले उन बच्चों का मानस परा-मेधा अथवा मिड-माइण्ड के स्तर से आगे बढ़ता हुआ महर्षि अरविन्द और युग-ऋषि श्रीराम-प्रणीत अतिमानस की ओर अग्रसर प्रतीत होता है।

तो भारत की ऐसी प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति को अब राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धति के तौर पर स्थापित करने सम्बन्धी नीतिगत शासनिक रुपरेखा तैयार करने के बाबत आयोजित होने वाले उस कार्यक्रम की तैयारियां जोरों पर हैं। इस हेतु भारतीय शिक्षण मण्डल के संगठन मंत्री मुकुल कानिटकर देश भर में प्रयास कर रहे हैं तो साबरमती गुरुकुलम के आचार्य दीप कोइराला तत्सम्बन्धी संयोजन-सूत्रों को समन्वित करने में लगे हैं। उक्त कार्यक्रम में गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति को शासनिक मान्यता देने-दिलाने के बाबत एक सरकारी निकाय के गठन का प्रारुप तैयार किये जाने की पूरी सम्भावना है। बहरहाल उस ऐतिहासिक आयोजन का परिणाम चाहे जो भी हो किन्तु इतना तो तय है कि उससे भारत के उस प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के उन्नयन-संवर्धन का मार्ग प्रशस्त होगा जिस पर चलते हुए यह राष्ट्र कभी परम वैभव को प्राप्त किए हुए था और आगे भी उसी मार्ग से उस अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

साबरमती - गुरूकुलम् में उत्तमभाई ने विश्व स्तर की योग्यता वाले मेधावी छात्रों को तैयार किया है। :

वरिष्ठ पत्रकार श्री विनीतजी नारायण

पंजाब केसरी, दि. ०८/०१/२०१८

शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की क्रांतिकारी पहल

विनीत नारायण

भगवान श्रीकृष्ण के गुरु संदीपनि मुनि के गुरुकुल की छत्रछाया में आगामी 28 अप्रैल से 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' उज्जैन से विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक क्रांति का शंखनाद करने जा रहा है। मैकाले की 'गुलाम बनाने वाली शिक्षा' ने गत 200 वर्षों से भारत को इतनी बुरी तरह जकड़ रखा है कि हम उससे आज तक मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के बोर्ड शिक्षा व्यवस्था में कोई नवीनता लाने को तैयार नहीं हैं। सब लकीर के फकीर बने हैं। पिछले 70 साल में हर शिक्षाविद् ने यह बात दोहराई कि मौजूदा शिक्षा प्रणाली के कारण हमारी युवा पीढ़ी परजीवी बन रही है। उसमें जोखिम उठाने, हाथ से काम करने, उत्पादक व्यवसाय खड़ा करने, अपने शरीर और परिवेश को स्वस्थ रखने व अपने अतीत पर गर्व करने के संस्कार नहीं हैं। उस अतीत पर जिसने भारत को सोने की चिड़िया बनाया था। वे आज भी औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रस्त होकर सरकार की बाबूगिरी को जीवन का लक्ष्य मानते हैं। यह बात दूसरी है कि सरकारी नौकरियां नगण्य हैं और आवेदकों की संख्या करोड़ों में। इससे युवाओं में हताशा, कुंठा, हीन भावना और हिंसा पनप रही है।

संघ से जुड़े बुद्धिजीवियों का लंबे समय से यह मानना रहा है कि जब तक भारत की शिक्षा व्यवस्था भारतीय परिवेश और मानदंडों के अनुकूल नहीं होगी तब तक मां भारती अपना खोया हुआ वैभव पुनः प्राप्त नहीं कर पाएगी। इसके लिए एक समानांतर शिक्षा व्यवस्था खड़ी करने की आवश्यकता है जो आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, उत्पादक, संस्कारवान व प्रखर प्रज्ञा के युवाओं को तैयार करे।

इस दिशा में अहमदाबाद के उत्तम भाई ने अभूतपूर्व कार्य किया है। हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला, साबरमती में विशुद्ध गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से शिक्षण और विद्यार्थियों का पालन पोषण कर उत्तम भाई ने विश्व स्तर की योग्यता वाले मेधावी छात्रों को तैयार किया है जिसके विषय में इस कालम में गत वर्षों में मैं दो लेख पहले लिख चुका हूं जिन्हें पढ़कर, देशभर से अनेक शिक्षाशास्त्री और अभिभावक साबरमती पहुंचते रहे हैं।

उज्जैन के सम्मेलन में इस गुरुकुल के प्रभावशाली अनुभवों और उपलब्धियों के अलावा देश के अन्य हिस्सों में चल रहे ऐसे ही दूसरे गुरुकुलों के साझे अनुभव से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पूरे देश में लाखों गुरुकुलों की स्थापना की तैयारी कर रहा है जिसका एक अलग शिक्षा बोर्ड सरकारी स्तर पर भी बने, ऐसा लक्ष्य रखा गया है, जिससे इस गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था में औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था के घालमेल की संभावना न रहे। इस अनुष्ठान में वेद विज्ञान गुरुकुलम (बेंगलूर), प्रबोधिनी गुरुकुलम हरिहरपुर (कर्नाटक), मैत्रेयी गुरुकुलम (मेंगलूर), सिद्धगिरि ज्ञानपीठ (महाराष्ट्र), आदिनाथ संस्कार विद्यापीठ (चेन्नई), श्री वीर लोकशाह संस्कृत ज्ञानपीठ गुरुकुल (जोधपुर), महर्षि याज्ञवल्क्य ज्ञानपीठ (गुजरात) व नेपाल के 6 गुरुकुल भी भाग ले रहे हैं। उज्जैन में इस सागर मंथन के बाद, जो अमृत कलश निकलेगा, वह पुनः स्थापित होने जा रही, भारत की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आधार बनेगा। अनादिकाल से भारतीय शिक्षा पद्धति नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी व विक्रमशिला जैसे गुरुकुलों के कारण विश्वविख्यात रही है। जहां सहस्त्रों छात्र और सैकड़ों आचार्य एक साथ रहकर अध्ययन व शिक्षण करते थे। वैदिक सनातन परम्परा के साथ ही बौद्ध और जैन मतों के गुरुकुल का भी प्रचलन रहा। 1823 तक देश के प्रत्येक ग्राम में बड़ी संख्या में पाठशालाएं होती थीं, जिनमें सभी वर्गों के लोगों को जीवनोपयोगी शिक्षा दी जाती थी। आवासीय व्यवस्था व समग्र शिक्षा से मंजे हुए युवा तैयार होते थे जो जीवन के हर क्षेत्र में अपना श्रेष्ठ योगदान करते थे।

लार्ड मैकाले

बाद में लार्ड मैकाले ने यह अनुभव किया कि भारत की इस सशक्त शिक्षा व्यवस्था को नष्ट किए बिना भारतीयों को गुलाम नहीं बनाया जा सकता इसलिए उसने एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था हम पर थोपी, जिसने हमें हर तरह से अंग्रेजियत का गुलाम बना दिया और हम आज तक उस गुलामी से मुक्त नहीं हुए।

'भारतीय शिक्षण मंडल' शिक्षा के भारतीय प्रारूप को पुनर्स्थापित करने का कार्य कर रहा है जिससे एक बार फिर भारत के गांवों में ही नहीं, नगरों में भी, गुरुकुल शिक्षा पद्धति स्थापित हो जाए जिससे बालकों का सर्वांगीण विकास हो। उज्जैन में होने जा रहे गुरुकुल शिक्षा के इस कुंभ में देशभर से शिक्षाविद् और आचार्यगण भाग लेंगे। अगर इस मंथन में गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था के प्रारूप पर आम सहमति बनती है तो भारतीय शिक्षण मंडल इस प्रस्ताव को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के पास लेकर जाएगा और उनसे गुरुकुल शिक्षा का एक अलग निदेशालय या बोर्ड गठित करने को कहेगा।

चूंकि मैंने स्वयं कई बार साबरमती में हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला की गतिविधियों को वहां रहकर निकट से देखा है और उसके छात्रों के प्रदर्शन को भी देखा है इसलिए मुझे इस सम्मेलन से बहुत आशा है। काश इसमें सहमति बने जो शायद वहां सरसंघचालक डा. मोहन भागवत जी की उपस्थिति और सद्इच्छा के कारण संभव होगी। इसमें भारत की किशोर आबादी को बहुत लाभ होने वाला है क्योंकि आज शिक्षा का इतना व्यवसायीकरण हो गया है कि अब शिक्षण संस्थानों में छात्रों का भविष्य नहीं बनता बल्कि उनका वर्तमान भी उनसे छीन लिया जाता है। विरले ही हैं जो अपनी मेधा और पुरुषार्थ से आगे बढ़ पाते हैं। जो शिक्षण संस्थान आज भी देश में अच्छी शिक्षा देने का दावा करते हैं, उनके छात्र भी भौतिक दृष्टि से भले ही सफल हो जाएं पर उनके व्यक्तित्व का विकास समग्रता में नहीं होता।

www.vineetnarain.net

पंजाब केसरी ई-पेपर Mon, 08 January 2018
epaper.punjabkesari.in//c/25236597

20 एकड़ भूमि पर तीन दिन में तैयार 'विराट गुरुकुल'

पत्रिका लाइव रिपोर्ट

कार्यक्रम को लेकर आरएसएस प्रमुख भागवत शहर पहुंचे

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

उज्जैन. एक आश्रम जहां लकड़ी-घास से बनी छोटी-सी कुटिया, एक कोने पर यज्ञ शाला, पास ही पशुओं को रखने का स्थान, पानी के लिए कुआं और छायादार घना वट वृक्ष... सबकुछ कृत्रिम, बावजूद प्राचीन भारत की गौरवमयी शिक्षा पद्धति और गुरु-शिष्य संस्कृति की जीवंत-सी झलक। विराट गुरुकुल सम्मेलन के लिए करीब 20 एकड़ क्षेत्र पर तीन दिन में विराट गुरुकुल की प्रतिकृति स्थापित की गई है।

गुरुकुल शिक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पहली बार शनिवार को तीन दिवसीय विराट गुरुकुल सम्मेलन प्रारंभ होगा। चिंतामण रोड स्थित महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान में होने वाले आयोजन को लेकर कार्यक्रम स्थल को भी प्राचीन भारत के गुरुकुल का स्वरूप दिया गया है। इसके लिए भोपाल से कलाकार व कारीगरों की टीम बुलाई गई है। तीन-चार दिन लगातार जुटकर कार्यक्रम स्थल को ऐसा आकर्षक स्वरूप दिया गया है कि पहली नजर में वह किसी गुरुकुल ग्राम-सा ही लगता है। इसके लिए कुएं, आश्रम, पशु, कुटिया, यज्ञ शाला आदि की प्रतिकृति तैयार की गई है। साथ ही कार्यशाला स्थल पर पलाश, चटाई की ईंट, बांस की ईंट आदि के जरिए प्रकृति आधारित स्थान का रूप दिया गया है। मुख्य मंच पर भी कृत्रिम विशाल वट वृक्ष बनाया गया है। प्राचीन स्वरूप देने के साथ पंडालों एक कंडिशनर बनाया गया है। कार्यक्रम को लेकर कई आमंत्रित लोग शुक्रवार को शहर पहुंच गए।

कार्यक्रम स्थल पर एक नजर... प्रदर्शनी डोम में गुरुकुल की झलक दिखाई देगी।

सरस्वती के डोम को भी प्राचीन शिक्षण स्थल का स्वरूप दिया है।

भोपाल के कलाकार कार्यक्रम स्थल को गुरुकुल का स्वरूप दिया।

व्यास मंडप के मुख्य मंच को विशाल वट वृक्ष के ओटले समान बना रहे।

यज्ञशाला भी बनाई जा रही है।

तीन हिस्सों में बांटा कार्यक्रम स्थल

1. **व्यास मंडप :** मुख्य कार्यक्रम के लिए विशाल व्यास मंडप (पंडाल) बनाया गया है। यहां मुख्य मंच बनाया है जिसे वट वृक्ष के ओटले का आकार दिया है। कार्यक्रम इसी डोम में होंगे।
2. **सरस्वती :** व्यास मंडप से नजदीक सरस्वती का डोम बनाया है। इसमें सात हॉल बनाए गए हैं जहां सेमिनार व कक्षाएं आयोजित होंगी।
3. **प्रदर्शनी :** कार्यक्रम स्थल पर पहला डोम प्रदर्शनी का बनाया गया है। यहां शिक्षा संबंधित विभिन्न पुस्तकें उपलब्ध रहेंगी। इसके अलावा गुरुकुल की प्रदर्शनी देखने को मिलेगी। इसके साथ ही खुले क्षेत्र में अश्वारोहण का प्रदर्शन होगा।

शुभारंभ 4.30 बजे से होगा- कार्यक्रम का शुभारंभ शाम 4.30 बजे से होगा। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत रहेंगे। वह शुक्रवार रात करीब 8.30 बजे शहर पहुंच गए हैं। भागवत कार्यक्रम स्थल पर ही रुके।

शुभारंभ कार्यक्रम अध्यक्षता मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्री डॉ. प्रकाश जावड़ेकर, विशिष्ट अतिथि शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सत्यपालसिंह, संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा, भारतीय शिक्षण मंडल अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद जोशी शिरकत करेंगे। स्वामी गोविंददेवगिरि, स्वामी राजकुमार दास, स्वामी शंकित सोमगिरि महाराज का सानिध्य भी रहेगा।

आज यज्ञ की पूर्णाहुति

शनिवार सुबह 9 बजे सांदीपनि वेदविद्या प्रतिष्ठान में सोमयाग चौहनी यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। दोपहर 3.30 बजे प्रदर्शनी का उद्घाटन होगा। शाम 4.30 बजे गुरुकुल सम्मेलन का शुभारंभ समारोह होगा। शाम 7 से 8.30 बजे तक विविध गुरुकुलों द्वारा संगीत प्रस्तुति दी जाएगी।

सम्मेलन में यह है खास

- अंतरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन में भारत सहित 6-7 देशों के करीब 2700 विद्वान, गुरुकुल संचालक व गुरुकुलीयों के शामिल होने की संभावना है।
- विभिन्न सत्रों में तीन दिन तक यह विद्वान देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करने व गुरुकुल पद्धति को बढ़ावा देने पर चर्चा करेंगे।
- तीन दिन विविध गुरुकुलों द्वारा संगीत प्रस्तुति होगी, जिसमें गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र कलाओं में जो सीखा है, उन कलाओं का प्रदर्शन होगा।
- प्रदर्शन में प्रमुख रूप से वेद पठन, संस्कृत पठन, संस्कृत नाटिका आदि प्रस्तुत किए जाएंगे।
- मैदानी प्रदर्शन में अश्वारोहण, योग, योग शिविर, मलखंब, कलरी पयु का भी प्रदर्शन होगा।
- कार्यक्रम स्थल बड़ा होने के कारण आगंतुकों को एक से दूसरे स्थल तक पहुंचने के लिए निःशुल्क ई-रिक्शा सुविधा रहेगी।

दैनिक भास्कर   दिनांक : २८-०४-२०१८

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को दिया गुरुकुल का रंग-रूप

सजावट में केवल प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग, देश-विदेश से पहुंचे प्रतिनिधि

उज्जैन | अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन के लिए चिंतामन रोड स्थित वेद विद्या प्रतिष्ठान परिसर में गुरुकुल जैसी सजावट की गई है। प्रदर्शनी पंडाल में गुरुकुल का स्वरूप बनाया गया है, जिसमें कुटी, पेड़-पौधे, गौ आदि हैं। विभिन्न सत्रों वाले मुख्य पंडाल में भी कपड़े और लकड़ी का उपयोग कर केले के वृक्षों की सजावट की गई है। पत्ते की पत्तलों से दीवारों को सजाया गया है। इसी तरह अन्य पंडालों में भी सजावट के लिए प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग किया है। ठंडे पानी का स्टाल भी कुटी में बनाया है। गुरुकुलों के प्रतिनिधियों के पहुंचने से परिसर में गुरुकुल जैसा वातावरण बन गया है। भारतीय शिक्षा मंडल की राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री के अनुसार अनेक संत भी पहुंच गए हैं। प्रस्तुति देने वाले गुरुकुलों के विद्यार्थी भी आए हैं।

प्रदर्शनी पंडाल में गुरुकुल की झांकी बनाई गई है, जिसमें कुटी और हिरण दिख रहा है।

इस पंडाल में गुरुकुलों की व्यवस्थाओं को लेकर अलग-अलग कक्षों में सत्र होंगे।

तुषार ने सात साल गुरुकुल में पढ़कर जीती गणित की दुनिया

उज्जैन | अहमदाबाद के हेमचंद्राचार्य गुरुकुल में सात साल पढ़ कर 14 साल के तुषार ने गणित की दुनिया जीत ली। उन्होंने 2016 में अलोहा द्वारा आयोजित वैदिक गणित की अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में गणित के 70 सवालों के जवाब 2.57 मिनट में देकर विश्व रिकार्ड तोड़ा था। इस स्पर्धा में 18 देशों के 1300 विद्यार्थी शामिल हुए थे। गुरुकुल सम्मेलन में तुषार भी शामिल हो रहे हैं। तुषार ने भास्कर से चर्चा में कहा- गणित के अध्ययन में सुधार करने का लक्ष्य है। मैं अपनी पढ़ाई पूरी कर गणित को सरल करना चाहूंगा। गणित इतना कठिन विषय नहीं है जितना विद्यार्थी मानते हैं। गणित को लेकर जो धारणा बनी हुई है, उसे तोड़ना होगा। तुषार बताते हैं गणित के साथ संगीत, आयुर्वेद और अन्य विषयों में भी मेरी रुचि है। तुषार के आचार्य डॉ. दीपक कोइराला के अनुसार तुषार केवल गणित में ही नहीं गुरुकुल में दी जाने वाली सभी शिक्षाओं में प्रवीण है।

उज्जैन सिटीजन

पत्रिका . उज्जैन . सोमवार . 30.04.2018 . पेज 02 . patrika.com

गुरुकुल सम्मेलन में कैलकुलेटर से तेज बच्चों का गणित, ये हैं अबेकस के गुरु

पत्रिका लाइव रिपोर्ट

सम्मेलन में वैदिक गणित के प्रदर्शन ने किया प्रभावित

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उज्जैन. विद्यार्थियों के लिए गणित का ज्ञान का काफी महत्वपूर्ण है, लेकिन वे गणित के नाम से ही डरते है। स्कूली बच्चों को गणित की अवधारणाओं को सिखाने के लिए आजकल विदेशी अबेकस पद्धति तेजी से उभरकर समाने आई है, जो बच्चों को गणित के जोड़-घटाव, गुणा-भाग के साथ मुश्किल सवाल आसानी से हल करना सिखाती है, लेकिन रविवार को विराट गुरुकुल सम्मेलन में साबरमती गुरुकुल विद्यार्थियों की वैदिक गणित प्रणाली अबेकस पर भारी पड़ती नजर आई। यहां के विद्यार्थी पलक झपकते ही 12 संख्या तक के सवाल आसानी से हल कर देते है। इसी के साथ विद्यार्थियों को कोई भी तारीख बताई जाए तो यह तत्काल उसका वार भी बता देते है। सम्मेलन में इन विद्यार्थियों की विद्या लोगों को काफी प्रभावित कर रही है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भारत के प्राचीन और ऐतिहासिक ज्ञान को सबके सामने प्रस्तुत कर रही है।

जितेंद्र

72 विद्या सिखाते हैं

साबरमती गुरुकुल के प्रमुख जितेंद्र भाई का कहना है कि अहमदाबाद, सूरत, मुम्बई सहित चार शहरों में संस्था के संस्थान संचालित है। साबरमती गुरुकुल में करीब 90 विद्यार्थी है और 300 से अधिक छात्राएं जुड़ी हुई है। यहां विद्यार्थियों को वैदिक गणित, संस्कृत सहित अन्य भाषा, ज्योतिष, चित्रकारी अन्य विद्या सिखाई जाती है। विद्यार्थियों को रटने की जगह व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है।

तुषार

इंडोनेशिया में जीता खिताब

साबरमती गुरुकुल के विद्यार्थी तुषार तलावट इंडोनेशिया मे आयोजित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के विजेता रह चुके है। यहां पर उन्होंने देशभर के विद्यार्थियों को अपनी गणित विद्या से मात दी। गुरुकुल सम्मेलन में पहुंचे तुषार भी सबके सामने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे है। इसके लिए एक डिब्बे में पर्ची मे सवाल और उसका हल दिया हुआ है। यहां पहुंचने वाले तुषार से प्रश्न पूछ रहे है और वह तत्काल जवाब दे रहा है।

मीत

हर तारीख का वार बताते

गुरुकुल के मीत मोदी की विद्या भी काफी प्रभावित करने वाली है। मीत किसी भी तारीख का वार तत्काल बता देता है। मीत के ज्ञान की भी काफी लोगों ने परीक्षा दी, लेकिन वह हर बार सफल हुआ। वह भूत और भविष्य सभी तारीखों के वार तत्काल बता देता है।

दैनिक भास्कर   दिनांक : २९-०४-२०१८

उज्जैन में अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन शुरू

जानापाव तीर्थ में प्रदेश सरकार शुरू करेगी गुरुकुल

दो माह में नई शिक्षा नीति, आरटीई में होगा संशोधन-जावड़ेकर

संघ और केंद्र के बीच में प्रदेश और संत का सान्निध्य।

गुरुकुल मतलब...

शास्त्रों का भी पुनरावलोकन कर सुधार की आवश्यकता-भागवत

नईदुनिया   दिनांक : २९-४-२०१८

गुरुकुलों को आधुनिक शिक्षा संस्थानों के समकक्ष मिलेगा दर्जा

नईदुनिया उज्जैन : मध्य प्रदेश के उज्जैन में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन शनिवार से शुरू हो गया है। चिंतामन गणेश मंदिर रोड स्थित महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या संस्थान परिसर में आयोजित सम्मेलन में केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि शिक्षा नीति में बड़े बदलाव की तैयारी केंद्र ने शुरु कर दी है। दो महीने में नई शिक्षा नीति का मसौदा तैयार हो जाएगा। अनावश्यक पाठ और जानकारियों को हटाया जाएगा। 5वीं-8वीं कक्षा की परीक्षाएं पहले की तरह ली जाएंगी। वहीं, म.प्र के मुख्यमंत्री शिवराज

बढ़ावा

- अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन में म.प्र के मुख्यमंत्री ने की घोषणा
- उज्जैन मे तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

उद्देश्य से काम कर रही है। पाठ्यक्रम में बदलाव के लिए देशभर के लोगों से सुझाव मंगाए हैं। अब तक 34 हजार सुझाव मिल चुके हैं। देश की जानकारी विद्यार्थियों को बताने के लिए भारत बोध नाम से पाठ्यक्रम भी केंद्र सरकार शुरू करने जा रही है, जो वैकल्पिक होगा। केन्द्रीय मानव संसाधन

विश्वेश्वरानंदजी, संत सवित सोमगिरि भारतीय शिक्षण मंडल के अध्यक्ष डॉ सच्चिदानंद जोशी, स्वामी विवेकान शोध व अध्ययन केंद्र के कुलपति प्रो रामचंद्र भट्ट, राहुल बोधि महाराज राज्यसभा सदस्य डॉ. सत्यनारायण जटिया सांसद चिंतामणि मालवीय भी मौजूद थे संघ प्रमुख बोले - चोर डाकू बनाने के कॉलेज नही खोले जाते। सज्जन बनाने के लि कॉलेज खोले जाते हैं। इसके बाद भी सज्ज नहीं बनते, क्योंकि बच्चों को ज दिखाई देता है वह वैसा बनने की कोशिश

नई दुनिया   दिनांक : १-०५-२०१८

देश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति स्थापित करने केंद्र सरकार को भेजेंगे अपेक्षा पत्र

उज्जैन : अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन का समापन, आचार्यों-विद्यार्थियों ने लिए 10 संकल्प

भारत रत्न रमण की तरह बनें आचार्य

गुरुकुलों की शास्त्रीय शिक्षा पद्धति को मुख्यधारा शिक्षा में बदलना होगा

गुरुकुल शिक्षा परंपरा के पांच संकायों पर विशेषज्ञों ने किया मंथन, कहा- यदि सरकारें ध्यान दें तो गुरुकुलों को पुनर्स्थापित करना कठिन नहीं

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

उज्जैन. व्यक्ति की सभी समस्याओं का समाधान ज्ञान से होता है। इसके लिए उसका सर्वांगीण विकास आवश्यक है, जो बेहतर शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर है। इसके लिए मौजूदा गुरुकुल की शास्त्रीय शिक्षा पद्धति को फिर से मुख्यधारा की शिक्षा बनाने का प्रयास करना होगा। इसके लिए सरकारों को ध्यान देना होगा। तभी इस परंपरा को पुनर्स्थापित किया जा सकेगा। उज्जैन में चल रहे अंतरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन के दूसरे दिन पांच संकाय आधारित परिचर्चा में विद्वानों ने इन्हीं विषयों पर मंथन किया। यहां से तैयार संकल्प पत्र अब केंद्र व राज्य सरकारों को सौंपा जाएगा। ताकी इस शिक्षा पद्धति को हालिया दौर में प्रासंगिक बनाया रखा जा सके।

इन वक्ताओं ने रखे विचार

परिचर्चा में विज्ञान पर वक्ता तेजस्व कुलकर्णी, रतन वशिष्ट, कपिलदेव मिश्रा, नाट्यशाला पर डॉ. सच्चिदानंद जोशी, अमीरचंद, आचार्य वासुदेव कृष्ण शास्त्री नेपाल, आचार्य कृष्णाशास्त्री, गोशाला पर दिनेश मरोठिया, आरपी तिवारी, टीवी कट्टीमनी, गिरीश प्रभुणे, वेधशाला में वक्ता अनिरुद्ध देशपाण्डे, डॉ. प्रतिमा जोशी, डॉ. मोहन लाल छिपा, आचार्य वेदनिष्ठ तथा पाठशाला ज्ञान निधि के वक्ता आचार्य हरिप्रसाद अधिकारी, डॉ. हेमचंद्र तथा आचार्य नीलकंठन ने अपने विचार रखे।

चिंतामण रोड स्थित महर्षि सांदीपनि वेद विद्या प्रतिष्ठान में आयोजित विराट गुरुकुल सम्मेलन में गुरुकुल शिक्षण पद्धति के संकाय पाठशाला (ज्ञान निधि), नाट्यशाला (कला), गोशाला (कृषि), वेधशाला (योग), प्रयोगशाला (विज्ञान) पर परिचर्चा हुई। जिनका निष्कर्ष निकला की भारत की महान ऋषि परंपराओं से संबद्ध उन समस्त गुरुकुलों और उनके गुरुओं-आचार्यों ने भारतीय ज्ञान-विज्ञान, कला, कृषि, योग आदि की पारंपरिक मशाल को बुझने नहीं दिया है। इंसान के जीवन में इन संकायों की विधाओं का ज्ञान होना चाहिए। भारतीय जीवन दर्शन का मूल आत्मिक चिन्तन, आत्मा की अमरता-दिव्यता तथा जीवन सत्य पर आधारित होना चाहिए।

नई दुनिया दिनांक : ३०-०४-२०१८

‘गुरुकुल संस्कार आधारित शिक्षा के केंद्र’

इंटरनेट से शिक्षा नहीं मिलती सिर्फ सूचनाएं ही मिल पाती हैं : जोशी

अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन का समापन आज

उज्जैन। नईदुनिया प्रतिनिधि

तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन का समापन सोमवार को होगा। उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किए गए हैं। इधर, सम्मेलन के दूसरे दिन रविवार को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर कार्यवाह भैयाजी जोशी ने कहा कि इंटरनेट से शिक्षा नहीं मिलती सिर्फ सूचनाएं ही मिल पाती हैं। अच्छा गुरु मिलना भाग्य की बात है, लेकिन अच्छा शिष्य मिलना भी बड़ी बात है। गुरुकुल केवल रहने और भोजन करने के विद्यालय नहीं, संस्कार आधारित शिक्षा के केंद्र होते हैं।

सोमवार को सम्मेलन के तीसरे दिन संघ के सह सरकार्यवाह सुरेश सोनी मुख्य वक्ता होंगे। बता दें कि शनिवार से आरंभ हुए इस सम्मेलन में देशभर के संस्कृत विद्वान और गुरुकुलों के आचार्य व शिक्षक शिरकत कर रहे हैं। आयोजन स्थल को प्राचीन परिवेश दिया गया है। जिस मंच पर आयोजन हो रहा है वहां कृत्रिम वटवृक्ष बनाया गया है। परिसर में भी कृत्रिम केले के पेड़ लगाए गए हैं। सम्मेलन के दूसरे दिन गुरुकुल के विद्यार्थियों ने मलखंभ आदि शारीरिक प्रदर्शन किए।

सम्मेलन के दूसरे दिन गुरुकुल के विद्यार्थियों ने करतबों का प्रदर्शन किया।

योगी का कार्यक्रम तय नहीं

समापन समारोह सोमवार दोपहर 2.30 बजे होगा। इसमें उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को आमंत्रित किया गया है। हालांकि स्थानीय प्रशासन को रविवार शाम तक योगी का कार्यक्रम नहीं मिला था।

उज्जैन सिटीजन   दिनांक : ०१-०५-२०१८

विराट गुरुकुल सम्मेलन से निकले अमृत से इस परंपरा को देंगे नया परिवेश

गुरुकुलों के उत्थान का भावी मानचित्र तैयार, केंद्र व राज्य सरकारों को भेजेंगे, ताकी ये परंपरा नए परिवेश में ढल सके

9 सूत्रीय संकल्प पत्र तैयार, 7 देशों के 121 प्रतिनिधि सहित 3702 विद्वान व बटुक हुए सम्मेलन में शामिल

पत्रिका लाइव रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

उज्जैन. तीन दिनी अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन का सोमवार शाम संकल्प पत्र निर्माण के साथ समापन हुआ। 7 देशों के 121 प्रतिनिधि सहित देशभर से आए 3702 विद्वान, बटुक व संस्कृतिविदों ने आपसी मंथन में जो अमृत निकाला उसका प्रतिवेदन केंद्र व राज्य सरकारों को भेजा जाएगा। ताकी गुरुकुल परंपरा व इसकी शैक्षणिक परिस्थितियों को मुख्य धारा में लाकर नए परिवेश में ढाला जा सके। मौजूदा शिक्षा पद्धति के दौर में समाज के सहयोग से इसे कैसे पुनर्जीवित किया जा सके, संकल्प पत्र में इस पर अधिक जोर दिया गया है। समापन के मौके पर खुला सत्र भी हुआ, जहाँ विद्वतजनों ने अपने विचार भी रखें।

अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन में उपस्थित विभिन्न गुरुकुलों के विद्वान व अन्य।

चिंतामण रोड स्थित महर्षि सांदीपनि वेद विद्या प्रतिष्ठान परिसर में भारतीय शिक्षण मंडल, मप्र संस्कृति विभाग व प्रतिष्ठान के संयोजन में आयोजित सम्मेलन के आखिरी दिन गुरुकुलों को मुख्यधारा से जोड़ने व समानांतर सत्र आहुति में सभी विषयों पर मंथन हुआ, जिनमें गुरुकुलों के संबंध में आगामी योजना, विस्तार, आचार्य निर्माण, आधुनिक शिक्षा में गुरुकुल, प्रशासकीय बाधाएं एवं उपाय आदि विषयों पर पृथक चर्चा हुई। इसके साथ ही देशभर से आए गुरुकुलों के आचार्य, गुरुजी, बटुक व विद्वतजन अपने गंतव्य के लिए रवाना हुए।

इन देशों के प्रतिनिधि बने भागीदार : सम्मेलन में नेपाल के 90, भूटान के 7, म्यांमार के 7, थाईलैंड के 5, जापान के 2 तथा दुबई के 3 प्रतिनिधियों ने शिरकत की। इनके साथ 21 राज्यों के प्रतिनिधि भी यहां पहुंचे। कुल 3702 डेलीगेट्स की मौजूदगी में गुरुकुलों के उत्थान व मुख्य धारा में लाने संबंधी संकल्प पत्र बना।

मंथन के निष्कर्ष से ये तय हुए संकल्प

भगवान श्री कृष्ण की शिक्षा भूमि के रूप में विख्यात पवित्र अवंतिका अर्थात उज्जैन नगर में हुए गुरुकुल सम्मेलन में हम सहभागी रहे। शिक्षा को लेकर हुए विचार विमर्श के उपरांत यह संकल्प करते हैं...

- प्राचीन काल से समर्थ स्वावलंबी समाज निर्माण करने वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहन देने मन, वचन व कर्म से क्रियाशील रहेंगे।
- अपने क्षेत्र में संचालित गुरुकुलों को समाज पोषित एवं स्वावलंबी बनाने में योगदान देंगे।
- गुरुकुल शिक्षा को युगानुकूल एवं देशानुकूल बनाने के लिए प्रारूप बनाने का कार्य करेंगे।
- आधुनिक शिक्षा संस्थानों में गुरुकुल शिक्षा के तत्व, वैज्ञानिक शिक्षण पद्धति, संस्कारक्षम वातावरण निर्मित करने व्यक्ति गत तथा संस्थागत स्तर पर कार्य करेंगे।
- नवीन गुरुकुलों की स्थापना के लिए भूमि एवं अन्य संसाधन उपलब्ध कराने उदारमना दानदाताओं को प्रेरित करेंगे।
- व्यक्ति त्व का सर्वांगीण विकास कर उन्हें समाज एवं राष्ट्रोपयोगी नागरिक बनाने वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में अपने बालक-बालिकाओं को प्रवेश दिलाने अभिभावकों को प्रेरित करेंगे।
- गुरुकुल शिक्षा के इस ज्ञानयज्ञ में अपनी सेवाएं समर्पित करने विभिन्न आचार्यों को प्रेरित करेंगे।
- समाज और मानवता का कल्याण करने वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयामों पर शोध करने एवं कराने शोधार्थी एवं शिक्षाविदों को प्रोत्साहित करेंगे।
- गुरुकुल के संचालन में आने वाली प्रशासनिक बाधाओं को न्यूनतम करते हुए समकक्षता और सुविधाएं प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

मंच पर साझा गुरुकुल की दिनचर्या व संस्कार

बटुक व बहनों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मोहा मन, नाटिका के जरिए बताया गुरुकुल में संस्कृति और विज्ञान का संगम

गुरुकुल सम्मेलन में वेद आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति देते वेदपाठी बालक। गुरुकुल की बहनों ने भी भारतीय परिवेश में वैदिक परंपरा अनुरूप प्रस्तुति दी।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

उज्जैन. चिंतामण रोड स्थित महर्षि सांदीपनि वेद विद्या प्रतिष्ठान परिसर में शनिवार शाम 4.30 बजे शुरू हुए विराट गुरुकुल सम्मेलन में गुरुकुलों की दिनचर्या व वहां के संस्कारों ने बटुक व बहनों ने मंच से साझा किया। वैदिक रीति-रिवाज व इसके अनुरूप कैसे जीवन दर्शन चलता है। यह सब अभिनय व वाचन के जरिए प्रदर्शित हुआ। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के बाद शाम 7.30 बजे से सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हुईं। जिसने उपस्थितजनों का मन मोहा।

वेद विद्यालयों में सिखाई जाने वाली कला व विधाओं से परिचित कराने गुरु कार्पणिय वेद विद्यालय गोकुल उप्र, एस बालासाहू गुरुकुल रत्नागिरि महाराष्ट्र, मैत्रेय वेद विज्ञान प्रतिष्ठान कर्नाटक व ऋषिकण्व वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन के विद्यार्थियों ने सहभागिता की। सूत्रधार आपस में संस्कृत व शुद्ध हिंदी में संवाद कर संचालन कर रहे थे। बहनों ने नृत्य द्वारा शिव आराधना भी प्रस्तुत की। बच्चों ने बताया कि गुरुकुलों में संस्कृति और विज्ञान अनूठा संगम भी देखने को मिलता है। हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला महाराष्ट्र के बच्चों ने वैदिक गणित के सवाल चुटकियों में हल किया मानों ये बच्चे ह्यूमन कैल्क्यूलेटर जैसे हों। समझाया गया गुरुकुल के ये बच्चे सारा कैल्क्यूलेशन अपने मस्तिष्क में ही कर लेते हैं।

प्राचीन वृक्ष स्वरूप गुरुकुल जैसा मंच- महर्षि सांदीपनि वेद विद्या प्रतिष्ठान परिसर में बने भव्य एसी डोम पांडाल में मंच की आभा प्राचीन स्वरूप में नजर आई। मुख्य मंच के पीछे प्राचीन पेड़ निर्मित किया। आसपास गुरु सांदीपनि का श्रीकृष्ण जी को अध्यापन करने के चित्र लगाए गए। वहीं मंच के सम्मुख प्राचीन शैली में मांडने, गोबर लेप आकृति व पुरातन सभ्यता अनुरूप सजावट की गई थी।

षोडशी यज्ञ की पूर्णाहुति

सम्मेलन से पूर्व दोपहर 12 बजे प्रतिष्ठान में सोम यज्ञ व षोडशी यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। ऋत्विकों द्वारा विधि विधान से ये कराया गया। प्रतिष्ठान उपाध्यक्ष प्रो. रवीन्द्र मूले के अनुसार इस दौरान दिग्विजय की प्राप्ति के लिए सर्वपृष्ठेष्टि यज्ञ भी हुआ। इसमें एक स्थान पर 10 देवताओं का आह्वान होता है।

देश में 4500 गुरुकुल

उद्घाटन अवसर पर संघ प्रमुख मोहन भागवत बोले कि खुशी की बात है कि देश में आधुनिक शिक्षा के बाजारीकरण के दौर में देश-विदेश में 4500 गुरुकुल संचालित हो रहे हैं, जिनमें से 800 गुरुकुल के शिक्षक विद्यार्थी इस सम्मेलन में शामिल हो रहे हैं। आज अभिभावक बच्चों को वही शिक्षा दिलाना चाहते हैं जिससे कि वह आगे चलकर खूब पैसा कमाए, घूस लेने की वृत्ति उसमें आ जाए तो वह बालक अच्छा मान लिया जाता है। भौतिक संपदा के दौर में गुरुकुल शिक्षण व्यवस्था का पुनर्स्थापन कैसे हो, समाज को चिंतन करना होगा। वेद व विज्ञान दोनों एक है, लेकिन इनसे भी आगे अध्यात्म है। आचरण की कसौटी से निकले अक्षर को ग्रहण कर मनुष्य खुद को मनुष्य बना सकता है। गुरुकुल शिक्षा में आज प्रासंगिकता व उसमें बदलाव पर भी केवल सरकार नहीं, समाज को भी चिंतन करना होगा। भागवत 7 बजे [illegible]

गुरुकुल सम्मेलन का आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने शुभारंभ किया।

500 रुपए में तो गंगा विंध्यांचल से ही निकलेगी

सीएम शिवराज बोले मैं जब सांसद था तब एक स्कूल में बच्चे से पूछा कि गंगा कहां से निकलती है तो वह बोला विंध्यांचल से। इस पर मैंने शिक्षक से पूछा कि आप यह क्या पढ़ा रहे हो, तो वे बोले 500 रुपए में तो गंगा विंध्यांचल से ही निकलेगी। शिक्षा का स्तर सुधारने शिक्षकों का भी आर्थिक उत्थान जरूरी है। सीएम बोले भगवान परशुराम की जन्मस्थली जानापाव में नया गुरुकुल प्रारंभ करेंगे। शासकीय व विधि स्तर पर गुरुकुल परंपराओं पर शोध आदि पर आस्था से काम करेंगे।

800 गुरुकुलों के शिक्षक व बटुक जुटे

सम्मेलन में केंद्रीय मंत्री थावरचंद गेहलोत, केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री सत्यपालसिंह, संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा, स्वामी संवित सोमगिरी, आचार्य गोविंददेव गिरि, स्वामी राजकुमारदास, स्वामी राहुल बोधी, स्वामी विशोकानन्द मंचासीन थे। 400 गुरुकुलों के सहित नेपाल, भूटान, म्यांमार, थाइलैंड में संचालित वेद विद्यालयों के विद्वान व बटुक यहां आए हैं। सम्मेलन में गुरुकुल परंपरा का भावी स्वरूप तैयार करने संकल्प पत्र बनेगा। इसे केंद्र व सभी राज्य सरकारों को भेजा जाएगा।

सम्मेलन में आज

- सुबह 9.30 से समानांतर सत्र आहुति 1, गुरुकुल शिक्षा के पांच संकाय ज्ञान निधि, विज्ञान, कृषि, कला व योग पर मंथन।
- दोपहर 11.15 से 1 बजे। गुरुकुल शिक्षण व्यवस्था पर ज्ञान यज्ञ।
- गौरवशाली इतिहास व वर्तमान स्थिति।
- दोपहर 2.30 बजे समानांतर सत्र आहुति 2 - सभा संभ संचालक, पोषक, आचार्य, छात्र, अभिभावक, शिक्षाविद्, तथा गणवेशकर्ता।
- शाम 4.30 से 6 तक गुरुकुल शिक्षण विधि व सांय 6.30 बजे से विविध गुरुकुलों द्वारा मंचीय प्रस्तुति।
- रात 10 बजे दीप निमिलन (दीपों की श्रृंखला)
- 30 अप्रैल को विभिन्न सत्रों के बाद सांय 3 बजे से संकल्प सत्र (समापन) होगा।

दैनिक भास्कर   दिनांक : २९-०४-२०१८

गुरुकुल विद्यार्थी ने बनाया जावडेकर का चित्र, देख किए हस्ताक्षर

जावड़ेकर गुरुकुल सम्मेलन में समय से पहले पहुंच गए। वे प्रदर्शनी द्वार पर बैठ गए। उनके साथ वीडी शर्मा, थावरचंद गेहलोत, सतीश मालवीय, वीरेंद्र कावड़िया थे। इसी बीच गुजरात के गुरुकुल के विद्यार्थी पारंपरिक वेशभूषा में उनके पास आ गए। जावड़ेकर ने एक वत्सल से गुरुकुल की पढ़ाई के बारे में बात की। इसी बीच उसी गुरुकुल का विद्यार्थी मनीष चौहान प्राकृतिक रंगों से बनाए चित्र लेकर आ गया। उसमें जावड़ेकर का चित्र भी शामिल था। जावड़ेकर ने चित्र देखा और उस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए। उन्होंने गुरुकुल के लोगों से गुरुकुल के बारे में जानकारी भी ली। गुरुकुल सम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों के अंतर्गत पहली शाम विभिन्न गुरुकुल के विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से गुरुकुल की गाथा, गुरुकुल की दिनचर्या और गुरुकुल में सिखाई जाने वाली विद्याओं को बताया।

उज्जैन सिटीजन
दिनांक : १-०५-२०१८

तीन दिनी सम्मेलन का आहुति सत्र

विद्वानों ने गुरुकुलों को पुनर्जीवित करने के लिए रखे अमृततुल्य विचार

उज्जैन @ पत्रिका. विराट गुरुकुल सम्मेलन के आखिरी आहूत सत्र में विभिन्न विद्वानों ने अपने प्रेरक उद्बोधन दिए। सभी ने गुरुकुलों को मुख्य धारा में लाने व आधुनिक शिक्षण के साथ समावेश पर जोर दिया। इसी आधार पर संकल्प पत्र बना है। विद्वानों ने विचार व्यक्त किए।

आत्ममुग्धता से बाहर आकर ग्रंथ विश्लेषण हो: सोनी

समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि शामिल आरएसएस के सह सरकार्यवाह सुरेश सोनी ने कहा कि प्राचीन ग्रंथों के गौरव गान के साथ नवीन विषयों का अनुसंधान भी होना चाहिये। हमें आत्ममुग्धता से बाहर आना पड़ेगा। श्रुति, युक्ति व अनुभूति का विचार करते हुए प्राचीन ग्रंथों का विश्लेषण करना चाहिए। पराविद्या के प्रकाश में भारतीय चिन्तन क्या होगा। धर्मविहीन कानून का कोई मतलब नहीं इसी तरह समाजविहीन समाजशास्त्र का कोई अर्थ नहीं। 21वीं सदी में यह समस्या है कि विपरीत धाराओं के बीच समन्वय कैसे करें। गुरुकुल शिक्षा पद्धति में प्रथम गुरु मां है और द्वितीय गुरु गुरुकुल है।

स्वामी गोविन्दगिरि ने संकल्प दिलवाया

समापन समारोह में स्वामी गोविन्दगिरि महाराज ने संकल्प पत्र का वाचन किया, जिसे उपस्थित लोगों ने दोहराया। वे बोले कि संकल्प से ही सिद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। इन तीन दिवसों में जो चिन्तन व मनन किया इससे ही गुरुकुल परंपरा दैदिप्यमान होगी। इसके लिए देश-विदेश से जितने भी प्रतिनिधि आए हैं वे अपने क्षेत्रों में गुरुकुल परंपरा पर पूरे साल कर्म करें। अन्यथा इस संकल्प को आगे ले जाना मुश्किल होगा।

ज्ञान प्राप्त करने श्रद्धा व तपस्या जरूरी : रवींद्र मूले

अध्यक्षीय उद्बोधन में सान्दीपनि वेदविद्या प्रतिष्ठान के आचार्य रवींद्र मूले ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा के द्वारा जीवन जीने का सामर्थ्य मिलता है। इस परंपरा में ज्ञान का अत्यधिक महत्व है। व्यक्ति यदि ज्ञान के लिए समर्पित होता है तो उसको कभी न कभी फल मिलता ही है। ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य सिद्धिदायी होना है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रद्धा व तपस्या की आवश्यकता होती है। गुरु वचनों पर श्रद्धा होनी चाहिए।

नई दुनिया
दिनांक : २९-०४-२०१८

500 आधुनिक आचार्य तैयार करेगा भारतीय शिक्षण मंडल

जुटाया जा रहा 150 करोड़ का फंड

जितेंद्र यादव
नईदुनिया प्रतिनिधि

गुरुकुल शिक्षा को एक बार फिर भारत की सिरमौर शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए कटिबद्ध भारतीय शिक्षण मंडल ने तय किया है कि वह देशभर के गुरुकुलों में पढ़ाने के लिए 500 आधुनिक आचार्य तैयार करेगा। ये आचार्य केवल वैदिक शिक्षा ही नहीं देंगे बल्कि उनमें आधुनिक और पुरातन ज्ञान-विज्ञान का समन्वय होगा। आचार्य बनाने के लिए देश के अलग-अलग राज्यों से निष्ठावान युवाओं को चुना जा रहा है। इन युवाओं को प्रशिक्षण देकर आचार्य बनाया जाएगा। इन आचार्यों के रहने-खाने, पहनने आदि का प्रबंध मंडल ही करेगा। इसके लिए लगभग 150 करोड़ रुपए का फंड जुटाया जा रहा है। प्रशिक्षण का मुख्यालय नागपुर में रखा जाएगा। जरूरत पड़ी तो देश के अन्य चुनिंदा स्थानों पर भी प्रशिक्षण केंद्र बनाए जाएंगे।

इन केंद्रों से तैयार होकर निकले आचार्य देश के विभिन्न गुरुकुलों में पढ़ाएंगे। आचार्य बनने के लिए 25 से लेकर 40 वर्ष की आयु के युवकों का चयन किया जा रहा है। मंडल में गुरुकुल शिक्षा के प्रभारी आचार्य डॉ. दीपक कोइराला बताते हैं कि अब तक 330 युवकों का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। देश में इस समय करीब 4 हजार गुरुकुल संचालित हो रहे हैं। आने वाले समय में देश में कई और गुरुकुल खुलेंगे। इन गुरुकुलों को सरकार और बाजार के नियंत्रण से मुक्त रखा जाएगा। इन गुरुकुलों में देश को समर्पित डॉक्टर, इंजीनियर, अर्थशास्त्री और बिजनेसमैन तैयार किए जाएंगे। बिजनेसमैन भी होंगे तो ऐसे कि देश, प्रकृति और समाज का शोषण किए बिना अपना बिजनेस मॉडल तैयार करेंगे। मंडल का कहना है कि इन गुरुकुलों में एक पाठ्यक्रम तो होगा जो दूसरी जगह से मिलेगा लेकिन भौगोलिक स्थिति, स्थानीय आवश्यकता और सांस्कृतिक व सामाजिक विविधताओं को ध्यान में रखते हुए इनमें बदलाव भी किया जाएगा। पाठ्यक्रम की बाध्यता रखकर कान्वेंट स्कूलों की तरह फैक्टरी एजुकेशन नहीं दिया जाएगा।

उज्जैन सिटीजन दिनांक : ३०-०४-२०१८

वर्तमान शिक्षा पद्धति व गुरुकुल परंपरा के अंतर पर बोले आरएसएस सह सरकार्यवाह जोशी

गुरु को दक्षिणा दी जाती है और आज फीस मांगी जाती है

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

उज्जैन. गुरु को दक्षिणा दी जाती है और फीस मांगी जाती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति और गुरुकुल परंपरा में यही अंतर है। दोनों में बच्चों के चरित्र निर्माण के लिए उन्हें शिक्षा ग्रहण कराई जाती है, लेकिन भाव में कितनी भिन्नता है। यह उद्गार आरएसएस सह सरकार्यवाह सुरेश भैयाजी जोशी ने विराट गुरुकुल सम्मेलन में समानांतर चल ज्ञान यज्ञ में शनिवार को व्यक्त किए।

वे बोले कि शिक्षा से केवल ज्ञान प्राप्त नहीं होता संस्कारों में शुद्धता आती है। गुरुकुल केवल आवासीय एवं भोजन व्यवस्था के विद्यालय नहीं हैं बल्कि यह परंपरा का निर्वाह व व्यक्ति को समग्र जीवन आधारित संस्कार देने की पाठशाला है। इंटरनेट पर प्राप्त होने वाली शिक्षा केवल सूचना मात्र है। जोशी ने कहा कि अच्छा गुरु मिलना भाग्य की बात होती है किंतु अच्छा शिष्य मिलना भी सौभाग्य होता है। भारत की गुरुकुल परंपरा को समझ कर दुनिया के अन्य देश इसको अपना रहे हैं।

गुरुकुल सम्मेलन में संबोधित करते भैयाजी जोशी।

पीएस बोले-परंपरा हाशिए पर, हमसे सीख रहे विदेशी

ज्ञान यज्ञ सत्र में संस्कृति विभाग पीएस मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि हमने गुरुकुल शिक्षा को हाशिए पर रख दिया है। लेकिन हमारी परंपराओं से दूसरे देश सीख रहे हैं और इसे अपना रहे हैं। इस पर चिंतन जरूरी है। सत्र को डॉ. शैलेंद्र मेहता ने भी संबोधित किया। वे बोले वर्तमान में विकास के नाम पर अंधी दौड़ मच रही है, जिसने भारतीय दर्शन एवं विज्ञान की शिक्षा को कमजोर बना दिया है।

पत्रिका Mon, 30 April 2018
epaper.patrika.com/c/28336524

दैनिक भास्कर दिनांक : २८-०४-२०१८

ऐसे हैं गुरुकुल... बारिश का पानी सहेजकर सालभर पीते हैं, प्राचीन तकनीक से कर रहे शुद्ध

उज्जैन | शहर में शनिवार से तीन दिनी अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन होगा। भास्कर ने देश के दो गुरुकुलों का हाल जाना। यहां कैसे दी जा रही है शिक्षा। पढ़िए रिपोर्ट...

कपड़ा, कागज, इंक, बिना यंत्र के बना रहे

अहमदाबाद का हेमचंद्राचार्य गुरुकुल

- 2008 से हुई शुरुआत
- 350 छात्राएं, सौ छात्र
- 64 कलाओं का ज्ञान

सोने-चांदी की लिखावट... सोने व चांदी की इंक से लिखने की कला है। ऐसा लिखा कागज तो 1000 साल तक खराब नहीं होगा।

जैविक भोजन... गुरुकुल में जैविक भोजन बनता है। बारिश में 1.5 लाख लीटर पानी टैंक में जमा होता है, जिसे छानकर पीते हैं।

वेद, कर्मकांड और यज्ञ की शिक्षा

उज्जैन का सीताराम गुरुकुल

- 2015 में हुई शुरुआत
- 55 छात्र सीख रहे वेद
- संगीत की भी शिक्षा मिल रही

मप्र व राजस्थान के विद्यार्थी... मप्र व राजस्थान के विद्यार्थी हैं। कर्मकांड सीखते हैं। ...00 रु. मासिक शुल्क लेते हैं।

खेल और योग... विद्यार्थियों के लिए आवासीय सुविधा है। उन्हें वेद शिक्षा के साथ योग, खेल और व्यायाम भी सिखाया जाता है।

देश में गुरुकुल	इनमें विद्यार्थी	आचार्य पढ़ाते
4500	25000	3000

विदेशों में भी गुरुकुल						
नेपाल	225	इंडोनेशिया 14	म्यांमार 4	ऑस्ट्रेलिया 5		
		श्रीलंका 10	अमेरिका 5	द. अफ्रीका 7		

सबसे पुराना गुरुकुल - नेपाल का, 126 साल हो गए, गुरुकुल परंपरा से संचालित। सबसे नया - कर्णावती का यज्ञालय, 2016 से विद्यार्थियों को प्रवेश

...और अब गुरुकुल व्यवस्था के लिए ये कदम

भारतीय शिक्षण मंडल गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक शिक्षा से जोड़ेगा तथा वैश्विक प्रतिष्ठा के अवसर से इसका पंजीयन कराने और उनके प्रमाण पत्रों को अंकसूची की तरह मान्यता देने के लिए सरकार को सुझाव देगा। आचार्यों के मान-वेतन के लिए कोष बनाएगा। समाज को गुरुकुलों से जोड़ेगा।

दैनिक भास्कर दिनांक : २९-०४-२०१८

अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन : चारों ओर गुरुकुल जैसा वातावरण, कृत्रिम वृक्ष लगाए, तांबे के लोटे से पानी पिलाया

नई दुनिया दिनांक : २९-०४-२०१८

वेद-ग्रंथ पढ़ने आना पड़ता है भारत, 'सरकार' मदद करे तो दुनियाभर में खुल जाएं गुरुकुल

अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन में आया नेपाल, भूटान, म्यांमार और थाइलैंड का डेलीगेशन बोला

धीरज गोमे
उज्जैन। नईदुनिया प्रतिनिधि

साल में तकरीबन 2 हजार लोग सिर्फ वेद अध्ययन और शोध के लिए भारत आते हैं। विश्व के कई देश ऐसे हैं जो भारतीय शिक्षा पद्धति के मूल में शामिल गुरुकुल को अपने यहां स्थापित करना चाहते हैं। मगर आचार्यों की कमी के कारण नहीं कर पा रहे। ऐसे में नेपाल, भूटान, म्यांमार और थाईलैंड के डेलीगेशन ने कहा है कि भारत सरकार अगर थोड़ी मदद कर दे तो पूरे विश्व में गुरुकुल खुल सकते हैं।

यहां अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन में शिरकत करने आए विदेशी प्रतिनिधिमंडल ने नईदुनिया से भारतीय गुरुकुल परंपरा और विदेशी गुरुकुल परंपरा की तुलनात्मक बातें साझा कीं। कहा कि अनादिकाल से भारतीय शिक्षा पद्धति गुरुकुलों के कारण विश्वविख्यात रही है। वेद-ग्रंथ, स्वावलंबन और अनुशासन की शिक्षा देने में भारत का आज भी कोई सानी नहीं है। यहां की वैदिक परंपरा और शिक्षा अद्भुत है।

भारत सरकार अगर हमें थोड़ा सहयोग कर दे तो उनके देश में भी उम्दा योगानुकूल गुरुकुल खुल जाएंगे। अगर ऐसा हो गया तो उनके बच्चे अपने ही देश में 16 विद्याओं का ज्ञान प्राप्त कर अपना सर्वांगिण विकास कर पाएंगे। इससे एक नए युग की शुरुआत होगी।

02 नईदुनिया
इंदौर, मंगलवार 01 मई 2018
मेरा शहर
www.naidunia.com

उज्जैन @ सोशल मीडिया

गुरुकुल सम्मेलन के तीसरे दिन भी विद्यार्थियों ने शारीरिक कलाओं व युद्ध कौशल के प्रशिक्षण का प्रदर्शन किया।

सम्मान समारोह के दौरान संतों के पोर्टेट बनाते गुरुकुल के दो विद्यार्थी

दैनिक भास्कर दिनांक : २९-०४-२०१८

गुरुकुल का कौशल... 32 अक्षरों का एक श्लोक, सोने की स्याही से लिखने का खर्च 350 रुपए

उज्जैन। अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रों से आए गुरुकुल के विद्यार्थी अलग-अलग कलाओं में पारंगत हैं। इन गुरुकुलों की अपनी खासियत भी है। प्रदर्शनी स्थल पर इन्हें देखा जा सकता है।

अब तक लिख चुके 500 शास्त्र

गुजरात के हेमचंद्र आचार्य गुरुकुल के विद्यार्थी स्वर्णाक्षरों में शास्त्र लिखते हैं। 32 अक्षरों वाले एक श्लोक को लिखने पर करीब 350 रु. खर्च आता है। केमिकल स्याही से वाला गुरुकुल में अब तक 500 से ज्यादा स्वर्णाक्षरों में शास्त्र लिखे जा चुके हैं।

घास, जो 15 दिन में एक फीट बढ़ती

कालिंदी से आए जीवंत विद्यापीठ गुरुकुल के विद्यार्थियों की दिन में घास कटी सेवेवेस दिखाई जाती है। गुरुकुल ने औषधीय घास तैयार की है। यह घास काटने के 15 दिन में फिर एक फीट बढ़ जाती है। गुरुकुल इस घास के बीज पूरे देश में उपलब्ध कराता है।

नृत्य, रंगोली, आयुर्वेद की शिक्षा

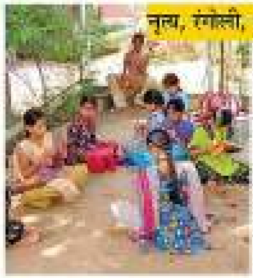

मैत्रेयी गुरुकुल केवल बालिकाओं का है। अभी 97 बालिकाएं हैं। आचार्य शोभा जोशी कहती हैं- वैदिक पद्धति से शिक्षा के साथ बालिकाओं को नृत्य, संगीत, रंगोली, आयुर्वेद की औपचारिक शिक्षा दी जाती है। शिक्षा के बाद बालिकाएं समाज में काम कर रही हैं।

दैनिक भास्कर दिनांक : २९-०४-२०१८

केंद्रीय मंत्री जावड़ेकर बोले- वेदपाठियों को भी मिलेगी बोर्ड के समकक्ष मान्यता

सेंट्रल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर्स को नोटिस जारी के मामले की भी होगी जांच

भास्कर संवाददाता | उज्जैन

वेद विद्या प्रतिष्ठान से वेदपाठी की शिक्षा पूरी करने वाले विद्यार्थियों को भी बोर्ड की तरह मान्यता मिलेगी। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

शनिवार को शहर आए जावडेकर ने भास्कर से विशेष चर्चा में कहाकि वेदपाठियों को संरक्षित एवं संवर्द्धित करने के लिए मंत्रालय पूरी तरह प्रयासरत है। वेदपाठियों को शिक्षा पूरी करने पर बोर्ड की तरह 10वीं-12वीं के समक्षक मान्यता दी जाएगी। वहीं कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के कार्यक्रम में शामिल होने व उनके साथ तस्वीरें खिंचवाने के मामले में सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ गुजरात के 9 प्रोफेसर्स को नोटिस जारी किए जाने के मामले में जावड़ेकर ने कहा कि नोटिस क्यों जारी हुए, इसकी जांच करवाई जाएगी।

दैनिक भास्कर दिनांक : ०१-०५-२०१८

अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन | संस्कृति सत्र में बोले वक्ता-दीनता और निराशा से निकलकर पुरुषार्थ और शौर्य से आगे बढ़ें

डॉक्टर और इंजीनियर भी गुरुकुल में एक साल करें पढ़ाई

भास्कर संवाददाता | उज्जैन

अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन में सोमवार को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह सर संघचालक सुरेश सोनी ने कहा- तीन दिनों में हमने तय किया कि भारत की शिक्षा का स्वरूप क्या होगा, इसके लिए क्या संकल्प लेने होंगे। उन्होंने कहा विश्व को समग्र शिक्षा का स्वरूप भारत के गुरुकुलों में ही मिल सकता है। भारत ही कहता है एक ही तत्व है जो सभी में विद्यमान है। यही विश्व की समस्याओं का समाधान है। यह दर्शन विश्व को एक कर सकता है।

वे समापन समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने

विश्वविद्यालयों में च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम लागू, विश्व में ज्ञान व सत्ता की खोज की जा रही

[illegible]

> गुरुकुल पद्धति ही एकमात्र पद्धति है, जहां की शिक्षा मानव के संपूर्ण विकास पर केंद्रित होती है। इसलिए खाका तैयार कर इस क्षेत्र में ठोस प्रयास करने की जरूरत है।
> – श्री मोहनराव भागवत
> सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

शिक्षा–संस्कृति–संस्कार

गुरुकुल का संसार

उज्जैन के महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान में संपन्न तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन में देश के गुरुकुलों में निर्मित हो रही अद्भुत प्रतिभा के दर्शन हुए। गुरुकुल में छात्रों का जीवन संस्कार- परंपरा में कैसे रच-बस रहा है, उसकी झलक स्पष्ट रूप से दिखाई दी

■ **अश्वनी मिश्र**, उज्जैन से लौटकर

गुजरात के अमदाबाद स्थित श्री हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला के छात्र तुषार विमलचंद तलावत अभी मात्र 16 वर्ष के हैं लेकिन वैदिक गणित में उन्होंने विश्व विजेता का खिताब जीता है। उनकी प्रतिभा का आकलन इस बात से किया जा सकता है कि उन्होंने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जहां 5300 विद्यार्थियों में प्रथम स्थान पाया तो वहीं राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 4300 छात्रों में भी उनका स्थान पहला ही रहा। इसी क्रम में इंडोनेशिया में संपन्न हुई विश्व स्तरीय प्रतियोगिता में 19 देशों के 1300 छात्रों को पीछे छोड़ते हुए तुषार ने गणित के 70 सवालों के जवाब महज 2.57 मिनट में देकर विश्व विजेता का पुरस्कार अपने नाम किया। वह सिर्फ वैदिक गणित की विद्या में पारंगत नहीं हैं बल्कि 64 कलाओं में से 20 कलाओं का उन्हें अच्छा-खासा ज्ञान है। वह पाठशाला में संगीत, न्याय विद्या,

सम्मेलन के मंच पर विराजमान (बाएं से) सर्वश्री प्रो.रामचन्द्र भट्ट, संवित सोमगिरि जी, स्वामी विश्वेश्वरानंद, राहुल बोधि, स्वामी गोविंद देव गिरि, मोहनराव भागवत, शिवराज सिंह चौहान, प्रकाश जावड़ेकर, थावरचंद गहलोत, डॉ. सत्यपाल सिंह, पारस जैन, सुरेन्द्र पटवा एवं श्री चिंतामणि मालवीय

विश्व विजेता तुषार तलावत

ज्योतिष, आयुर्वेद, संस्कृत, कुश्ती, मलखम्भ, योग, कला और साथ-साथ जूडो -कराटे में भी पारंगत हो रहे हैं। इतना ही नहीं तबला, हारमोनियम और गायन से उनका विशेष लगाव है। जब वह तबला और हारमोनियम बजाते हैं तो देखने वाला व्यक्ति उनकी प्रतिभा का कायल हुए बिना नहीं रह पाता। क्योंकि इतनी कम उम्र में 20 से अधिक विद्याओं में निपुण होना किसी को भी अचंभित करेगा। 6 वर्ष से अधिक समय से गुरुकुल में रह रहे तुषार का संकल्प है कि वह अध्ययन पूर्ण करने के बाद वैदिक गणित को संपूर्ण देश में पुनः प्रतिष्ठित करेंगे।

ऐसे ही 17 वर्षीय वत्सल अमित भाई शाह हैं। मूल रूप से अमदाबाद के रहने वाले वत्सल संस्कृत, गुजराती, अंग्रेजी, ज्योतिष और आयुर्वेद के साथ-साथ मलखम्भ, योग, कराटे, कुश्ती एवं सारंगी बजाना सीख रहे हैं। कुछ कलाओं में उन्होंने निपुणता प्राप्त कर ली है तो कुछ का अभ्यास चल रहा है। हाल ही में उन्होंने अमदाबाद में संपन्न न्याय से जुड़ी शलाका परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाया है। इसके अलावा वह विभिन्न विश्व स्तरीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा ले

झलकियां

- 1,200 वर्ष बाद अन्तरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन
- पर्यावरण के अनुकूल परिसर
- प्रदर्शनी के जरिए गुरुकुलों ने अपने यहां दी जा रही शिक्षा का किया प्रदर्शन
- प्लास्टिक का न के बराबर प्रयोग
- 10 देशों के प्रतिनिधियों ने की सहभागिता

गुरुकुल को केवल आवासीय विद्यालय नहीं कह सकते। यह परंपरा समग्र रूप से जीवन में संस्कार भरने का काम करती है।

– श्री भैयाजी जोशी
सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ

चुके हैं। 15 वर्षीय आदित्य चंद्रा भी ज्योतिष, वैदिक गणित, संस्कृत और घुड़सवारी सीख रहे हैं। 13 वर्षीय मनीष चौहान चित्र बनाने में माहिर हैं। उन्होंने दर्जनों महापुरुषों के बड़े ही मनमोहक चित्र बनाए हैं। इन चित्रों को देखने के बाद ऐसा नहीं लगता कि यह एक बालक के हाथों की कारीगरी है। इसी तरह कर्नाटक स्थित नित्यानंद गुरुकुल के 8 वर्ष के ब्रह्मयोगानंद ब्रेल लिपि पढ़ने में पारंगत हैं। कोई कुछ भी लिख दे, वह आंख बंद करके उसे तुरंत पढ़कर बता देते हैं। इससे भी बड़े आश्चर्य की बात यह महज 7 वर्ष के श्रीब्रह्म 'बॉडी स्कैन' में निपुण हैं। वह आंख बंद करते ही सामने खड़े व्यक्ति के बारे में उसके शरीर से जुड़ी विभिन्न चीजें बताने लगते हैं जिनमें अधिकतर सच होती हैं।

तुषार, वत्सल, आदित्य, मनीष, मोक्ष, तेजस्वीभाई, संजयभाई, ध्रुव, ललित, जनेश जैसे ऐसे सैकड़ों बच्चे हैं जिन्हें देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित गुरुकुलों में तराशा जा रहा है। यहां अध्ययन करके न केवल उनकी प्रतिभा में निखार आ रहा है बल्कि वे एक दो नहीं बल्कि दर्जनों विद्याओं के विद्वान बन रहे हैं। दरअसल इन सभी प्रतिभाओं की झलक महाकाल की पावन भूमि उज्जैन में महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान में 28-30 अप्रैल को संपन्न हुए अंतरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन में देखने को मिली जहां देशभर के गुरुकुलों से छात्र और प्रतिनिधि

साबरमती गुरुकुल में अध्ययनरत मनीष अपने बनाए राणा प्रताप के चित्र के साथ

आंख बंद करके पढ़ने में माहिर नित्यानंद गुरुकुल के ब्रह्मयोगानंद

एकत्र हुए थे।

सम्मेलन में अमदाबाद स्थित हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला के दर्जनों बच्चे आए हुए थे, जो प्रदर्शनी में अपनी कला-विद्या का प्रदर्शन करके लोगों को मंत्रमुग्ध कर रहे थे। दरअसल इस संस्कृत पाठशाला की शुरुआत 10 वर्ष पहले हुई थी। प्रारंभ में कई समस्याएं आईं लेकिन आज यह पाठशाला राज्य में मानक बनकर उभरी है। पाठशाला के प्रधानाचार्य और भारतीय शिक्षण मंडल के गुरुकुल प्रकल्प के प्रमुख डॉ. दीपक कोइराला बताते हैं, ''हमारे यहां के बच्चे लगभग 20 कलाओं में निपुणता प्राप्त कर रहे हैं और जब कोई भी इनकी प्रतिभा देखता है तो मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह पाता। इसी का परिणाम है कि ख्याति प्राप्त लोगों के बच्चे भी आज इस पाठशाला में प्रवेश पाने के लिए कतार में हैं। दरअसल हमारे गुरुकुल में प्राचीन पद्धति से बच्चों को युगानुकूल शिक्षा दी

सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधि

आज के समय में संस्कार युक्त शिक्षा की जरूरत है। यही मनुष्य के जीवन को आदर्श बनाने वाली है और यह गुरुकुल शिक्षा से ही प्राप्त होगी।

– श्री सुरेश सोनी

सहसरकार्यवाह, रा.स्व.संघ

'बॉडी स्कैनिंग' में पारंगत नित्यानंद गुरुकुल के श्री ब्रह्म

दर्जनों कला-विद्याओं में निपुण साबरमती गुरुकुल के वत्सल शाह

जाती है। पाठशाला में आज के समय के अनुसार कक्षा के हिसाब से अध्ययन नहीं कराया जाता बल्कि उनके बौद्धिक स्तर को देखते हुए अध्ययन कराया जाता है। इसका परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हमारे बच्चे न केवल विभिन्न कलाओं में निपुण हैं बल्कि कई विद्याओं के ज्ञानी बन रहे हैं।'' वे शिक्षण मंडल की आगामी योजनाओं के बारे में बताते हैं, ''हमारा जोर गृह गुरुकुल को बढ़ावा देने का है जहां आचार्य अपने घरों में ही छात्रों को अध्ययन कराने का काम करते हैं। समाज में कुछ लोगों को भ्रान्ति है कि गुरुकुल संस्कृत और वेद अध्ययन का ही केन्द्र है। पर ऐसा नहीं है। गुरुकुलों में गो विज्ञान, वैदिक गणित, कृषि, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद का ज्ञान दिया जाता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह भारत में बड़ी समृद्ध परंपरा रही है। इसलिए हम इसे पुनर्जीवित करने का काम कर रहे हैं।'' दीपक कोइराला की मानें तो शिक्षण मंडल याज्ञवल्क्य पीठ के माध्यम से आचार्यों को सूचीबद्ध करने का काम कर रहा है और अब तक लगभग 2,000 से अधिक आचार्य सूचीबद्ध हुए हैं। इसके अलावा देश के लगभग 22 गुरुकुलों के साथ शिक्षण मंडल ने सहयोग किया है जो आज आधुनिक गुरुकुल के प्रारूप के रूप में उभरे हैं।

स्वर-उच्चारण के संरक्षण पर जोर

पुणे स्थित महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान जम्मू से लेकर मणिपुर तक लगभग 34 गुरुकुलों का संचालन करता है। 1990 से गुरुकुल की शुरुआत करने वाले श्री गोविंद देव गिरि जी महाराज सम्मेलन में प्रमुख रूप से उपस्थित थे। उन्होंने पाञ्चजन्य से बात करते हुए कहा, ''वेद ज्ञान का भंडार हैं और इस ज्ञान रूपी भंडार का कभी लोप न हो, इसके लिए हम कार्य कर रहे हैं। वेदों को पुस्तक रूप में संरक्षित करने का कोई अर्थ नहीं है। अगर इसको संरक्षित करना है तो इसके विद्वानों द्वारा इसके उच्चारण और स्वरों को संरक्षित करना होगा।'' वे बताते हैं, ''हमारा जोर वेदों को तीन रूप से संरक्षित करने का है। पहला, शब्द रक्षा- अर्थात् शब्दों का संरक्षण। दूसरा, अर्थरक्षा- वेद में बताए गए अर्थ का संरक्षण और तीसरा, सिद्धांत स्थापना के जरिए वेद में कृषि, स्वास्थ्य, देश, मनोविज्ञान एवं अन्य प्रमुख चीजों के बारे में बताएं गए सिद्धांतों का संरक्षण।''

पारंपरिक ज्ञान के साथ आधुनिक ज्ञान

"भविष्य में हमारा स्वप्न आइआइटी गुरुकुल का है"

भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री मुकुल कानिटकर कहते हैं, "विराट गुरुकुल सम्मेलन का उद्देश्य देश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पुनर्स्थापित करके उसे युगानुकूल बनाना है। ऐसे में यहां से निकलने वाले बच्चे विविध क्षेत्रों में न केवल देश-समाज को उच्च शिखर पर ले जाएंगे बल्कि जो सोच नहीं सकते, वह करके दिखाएंगे।" पाञ्चजन्य संवाददाता अश्वनी मिश्र ने उज्जैन स्थित महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान में उनसे गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था से जुड़े विभिन्न विषयों पर लंबी बात की। प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश -

■ अंतरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

सम्मेलन के उद्देश्य को तीन भागों में बताया जा सकता है। पहला, प्राचीन गुरुकुल परंपरा को बनाये रखने का संघर्ष बहुत सारे लोग कर रहे हैं, जिसके चलते देशभर में अभी चार हजार से अधिक गुरुकुल हैं। यह सभी लोग बड़े संघर्ष के साथ इन्हें चला रहे हैं। इसके बाद भी उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं है। इसलिए हमारा पहला उद्देश्य है कि सभी संगठित हों। दूसरा, उनका आत्मबल विकसित हो ताकि वे इस काम को और आत्मविश्वास के साथ करें। उनको लगना चाहिए कि हम जो काम कर रहे हैं वह अकेले नहीं बल्कि बहुत सारे लोग कर रहे हैं और उसकी समाज में प्रतिष्ठा है। तीसरा, समाज के अंदर गुरुकुल शिक्षा को युगानुकूल शिक्षा की तर्ज पर 'ब्रांड' बनाना। क्योंकि आज समाज 'ब्रांड' की ओर ज्यादा आकर्षित होता है। इसलिए इस तरह के बड़े आयोजन से समाज का ध्यान आकर्षित होता है। क्योंकि इसमें बड़े बुद्धिजीवी, ख्याति प्राप्त विद्वान आते हैं जो समाज को संस्कृति-परंपरा को पुनर्स्थापित करने की राह दिखाते हैं। इससे समाज का ध्यान इस ओर आता है।

■ सम्मेलन में कितने गुरुकुल एवं विदेश के प्रतिनिधियों की सहभागिता रही?

इस सम्मेलन में लगभग ८०० से अधिक गुरुकुल और उनके प्रतिनिधि एकत्रित हुए। लेकिन कुल मिलाकर देखें तो 3500 लोग यहां पर आए जिसमें 6-7 सौ ऐसे थे, जो सीधे तौर से गुरुकुल से नहीं जुड़े थे लेकिन आधुनिक शिक्षा या भारतीय शिक्षण मंडल के कार्यकर्ता हैं। दूसरी बात विदेश के गुरुकुलों और प्रतिनिधियों की तो नेपाल से श्रीराम अधिकारी सहित ९५ प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में सहभागिता की। इसके अलावा भूटान, म्यांमार, थाईलैंड, जापान, दुबई, कनाडा, सिंगापुर से भी लोग आए। इसमें कुछ गुरुकुल नहीं चलाते लेकिन वे अपने देश में गुरुकुल चलाना चाहते हैं। कुल मिलाकर दस देशों के लोगों की सहभागिता रही है।

■ आप भारत के अलावा कहां-कहां गुरुकुल शिक्षा पद्धति का विस्तार होने की संभावना देखते हैं?

देखिए, इंडोनेशिया सरकार ने हिन्दू स्वयंसेवक संघ के संघचालक से निवेदन किया है कि हमें 15 गुरुकुल खोलना है, आप विद्वान आचार्य दीजिए। हम आने वाले समय में यहां आचार्यों की व्यवस्था करेंगे। इसके अलावा मॉरिशस, साउथ अफ्रीका, वेस्टइंडीज, त्रिनिदाद से भी गुरुकुल खोलने की मांग हैं। इस सबको देखते हुए हमें पूरा विश्वास है कि अंतरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन के बाद गुरुकुल शिक्षा विश्व में मुख्य शिक्षा की धारा बनेगी। जैसे योग की अन्तरराष्ट्रीय स्तर

पर छवि का निर्माण हुआ इसी तरह गुरुकुल शिक्षा भी पुनर्स्थापित होगी।

■ **भारत में गुरुकुल शिक्षा पद्धति को लेकर एक अवधारणा है कि वहां से पढ़कर बच्चा सिर्फ कर्मकांड ही करेगा। गुरुकुल शिक्षा फिर से पुर्नस्थापित हो और समाज का वह मानस बदले, इसके लिए आप क्या कर रहे हैं?**

इसमें दो काम करने की आवश्यकता है और यह हम कर भी रहे हैं। पहला, गुरुकुलों का युगानुकूलीकरण। हमारे बच्चे संस्कृत, वेद-वेदांग का पाठन करें लेकिन इसके साथ वह कम्प्यूटर या अन्य यंत्र भी भी चला सकें। इसलिए प्रशिक्षण मंडल की प्रेरणा से जो 15-16 गुरुकुल चलते हैं, उसमें युगानुकूल पद्धति से ही पठन-पाठन होता है। अन्य गुरुकुलों में भी यह पद्धति आने लगी है। दूसरा काम करना है, वर्तमान में जो महाविद्यालयी शिक्षा है वह फैक्ट्री शिक्षा जैसी चली आ रही है, उसे बदलना। यानी सामान्य शिक्षा का गुरुकुलीकरण। हमारा उद्देश्य है कि भारत की समग्र शिक्षा ही गुरुकुल जैसी हो। जब यह होने लगेगा तो यहां से जो बच्चे निकलेंगे वह विविध क्षेत्रों में देश-समाज को उच्च शिखर पर ले जाएंगे। भविष्य में हमारा स्वप्न आइआइटी गुरुकुल का है, जो पूरा होगा।

■ **अभिभावक गुरुकुल शिक्षा पद्धति की ओर आकर्षित हों, इसके लिए क्या विचार है आपके मन में?**

अविभावकों के उद्बोधन के लिए दो विषय हैं। आधुनिक शिक्षा को लेकर आज समाज के मन में पीड़ा है, इसे हम सभी लोग अनुभव करते हैं। इसका परिणाम यह है कि वह अपने बच्चों के लिए शिक्षा का नया विकल्प ढूंढ रहे हैं। मेरे संपर्क में 20 हजार परिवार ऐसे हैं, जिन्होंने अपने बच्चों को स्कूल से निकाल लिया। यह सभी अपने बच्चो को गुरुकुल भेजने को तैयार हैं। दरअसल हमारे समाज में एक बड़ी तादाद ऐसे लोगों की है कि जो जानते हैं कि यह गलत है लेकिन पड़ोसी का बच्चा उसमें पढ़ता है, इसलिए हमारा भी बच्चा उसी में पढ़ेगा। अगर ऐसा नहीं करते हैं तो प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचेगी। इस भावना को बदलने की जरूरत है और मुझे विश्वास है कि यह परिवर्तन होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

■ **भारत में गुरुकुल की समृद्ध परंपरा रही है, लेकिन बीच के काल में इसका ह्रास हुआ। कारण क्या था?**

निःसंदेह विश्वभर से लोग भारत में शिक्षा ग्रहण करने आते थे। हर वर्ग, स्त्री-पुरुष को शिक्षा मिलती थी और यह स्थिति वर्ष 1823 तक रही। 1823 में अंग्रेज अधिकारी थामस मुनरो एक सर्वेक्षण में लिखता है कि भारत सौ प्रतिशत साक्षर है और इसमें 76 प्रतिशत पूर्ण रूप से शिक्षित हैं। इसका कारण यह था कि शिक्षा सत्ता पर आधारित नहीं थी। यह समाज पोषित शिक्षा थी। इसलिए भारत में लाखों की संख्या में गुरुकुल थे, जहां अलग-अलग विद्याओं के विद्वान तैयार किए जाते थे। लेकिन मुगल आक्रांता खिलजी ने 1193 में नालंदा को जला दिया। यह वह समय था जब गुरुकुल पद्धति का ह्रास हुआ।

■ **मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई शिक्षा नीति पर काम कर रहा है। क्या उसमें गुरुकुल शिक्षा से जुड़े कुछ बिंदु आने की संभावना है?**

संभावना तो पूरी है। पर गुरुकुल नाम से नहीं होंगे। हमने आधुनिक शिक्षा का ही गुरुकुलीकरण कैसे करना है, इसके बारे में सुझाव दिए हैं। दूसरी बात आज आप फिनलैंड की शिक्षा व्यवस्था को देखें। वह अपनी पूरी शिक्षा को गुरुकुल पर ले आए हैं। उनको पता नहीं गुरुकुल क्या है, लेकिन वह इसी तर्ज पर काम कर रहे हैं। वहां 'क्लास रूम' बंद हो गए, विषयवार शिक्षा बंद हो गई। अब वहां समग्र शिक्षा शुरू हो गयी। हमें विश्वास है कि जब फिनलैंड ने कर दिया तो भारत भी इस क्षेत्र में अच्छा ही करेगा।

> **अंतरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन के बाद गुरुकुल शिक्षा विश्व में मुख्य धारा की शिक्षा बनेगी। जैसे योग की अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर छवि का निर्माण हुआ इसी तरह गुरुकुल शिक्षा भी पुनर्स्थापित होगी।**

■ **उज्जैन श्रीकृष्ण और सुदामा की शिक्षा स्थली है। सांदीपनि आश्रम में ही उन्होंने 14 विद्याएं एवं 64 कलाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। ये सब विद्याएं समाज को फिर से ज्ञानवान करें, इसके लिए आप क्या प्रयास कर रहे हैं?**

वैसे तो हमारा प्रयास सभी विद्याओं के विद्वानों को खोजने का है। इसी क्रम में हमने अलग-अलग कला और विद्याओं के 36 आचार्य खोज निकाले हैं। यह सभी आचार्य आने वाले समय में समाज को अपने ज्ञान से लाभान्वित करेंगे।

■ **सम्मेलन में देश-दुनिया से जो लोग आए, वह क्या संदेश और संकल्प लेकर यहां से गए?**

तीन चीजें प्रमुख रूप से हैं। पहला व्यक्तिगत स्तर पर कि मैं क्या कर सकता हूं? मैं अपने बच्चों को भेज सकता हूं? संसाधन दे सकता हूं? मेरे पास किसी विषय का ज्ञान है तो उस विषय का आचार्य बन सकता हूं? दूसरा, संस्थागत स्तर पर क्या योगदान कर सकता हूं? और तीसरा जो महत्वपूर्ण बात है वह है समाज का मानस बनाना। इस कार्य को सभी लोग कर सकते हैं। यह कार्य सबसे बड़ा कार्य होगा।

■ **अगर कोई गुरुकुल खोलना चाहे तो शिक्षण मंडल उसमें क्या सहायता करता है?**

श्री हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला के छात्र मलखम्भ का प्रदर्शन करते हुए

हरियाणा के आर्यसमाज गुरुकुल के छात्र-छात्राएं दंड कला का

पुणे स्थित समरसता गुरुकुल का प्रमुख ध्यान अपने बच्चों के कौशल विकास पर है। इस गुरुकुल के अधिकतर बच्चे घुमंतु समुदाय से हैं, जो मूर्तिकला के अलावा विभिन्न चीजों की कारीगरी में निपुण हो रहे हैं। गुरुकुल को एक मिशन मानकर चलने वाले गिरीश प्रभुणे कहते हैं, ''वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने पारंपरिक कौशल को दरकिनार किया है, जबकि यह शिक्षा बड़ी ही समृद्ध है। इसलिए हम गुरुकुल में पारंपरिक ज्ञान के साथ आधुनिक ज्ञान को समाहित करके बच्चों को शिक्षा दे रहे हैं। आज हमारे यहां 350 बच्चे हैं, जो वेद-उपनिषद्, ज्ञानेश्वरी, दशबोध, धम्मपाद के अलावा कम्प्यूटर की भी शिक्षा ले रहे हैं। समय-समय पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ भी इन बच्चों को शिक्षा देने का काम करते हैं। इसी का परिणाम है कि हमारे बच्चे न केवल मशीनों के कल-पुर्जे का निर्माण करने के बारे में जानते हैं बल्कि वेद और उपनिषद् के बारे में भी उतना ही जानते हैं।''

पंचमुखी शिक्षा को मिला पुनर्जीवन

वर्ष 1994 में कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ में शुरू हुआ मैत्रेय गुरुकुलम् पंचमुखी शिक्षा के माध्यम से पारंपरिक शिक्षा को पुनर्जीवित करने का सार्थक प्रयास कर रहा है। गुरुकुल में अध्ययन कर चुके साईं रश्मि, जो अब यहीं आचार्य बन चुके हैं, बताते हैं, ''यहां पर वेद, योग, विज्ञान, कृषि और बच्चों के कौशल विकास पर ध्यान दिया जाता है। इसके अलावा आधुनिक और पारंपरिक दोनों तरीके से बच्चों को विद्याध्ययन कराया जाता है। यहां की विशेषता है कि गुरुकुल में 97 लड़कियां वेद अध्ययन कर रही हैं, जो मातृश्री की निगरानी में रहती हैं। इसके अलावा वे और भी विद्याओं में निपुणता प्राप्त कर रही हैं।''

विविध भाषाओं की शिक्षा

कर्नाटक का चिकमगलूर स्थित प्रबोधिनी गुरुकुलम् हर वर्ष 10-11 वर्ष के 15-20 बच्चों को वेद, कृषि, योग, विज्ञान, कला और संगीत में प्रवीणता के लिए प्रवेश देता है। गुरुकुल के आचार्य प्रवेश पाए बच्चों को कन्नड़, अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत में शिक्षा देने का काम करते हैं। अध्ययन के बाद यहां के बच्चे सेवा गतिविधियों में भी अपना योगदान करते हैं।

पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण

कर्नाटक स्थित वेद विज्ञान गुरुकुल की शुरुआत 1997 में हुई थी। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य वेद, शास्त्र और योग के अमूल्य ज्ञान को संरक्षित करना है। यहां के छात्र अध्ययन के बाद सेवा बस्तियों में जाते हैं और वहां बच्चों को संस्कृत बोलना, योग करना सिखाते हैं। इसके अलावा स्कूलों में राष्ट्र भाव को बढ़ावा देने

प्रदर्शनी में उपस्थित मंगलुरु स्थित मैत्रेय गुरुकुलम् की आचार्य एवं छात्राएं

प्रदर्शन करते हुए

धनुर्विद्या का प्रदर्शन करते हुए छात्र

के लिए वे क्षेत्र के स्कूल और घरों में जाकर बच्चों के प्रबोधन का काम करते हैं।

प्रशासनिक सेवा के लिए करते तैयार

उडुपी के हरिकनडिक गांव में चल रहा निवृत्ति गुरुकुलम् दिखने में छोटा प्रवास लगता है लेकिन आने वाले दिनों में यहां से निकलने वाले छात्र देश में एक नया परिवर्तन लाएंगे। मात्र ढाई वर्ष पहले शुरू हुआ यह गुरुकुल अपने यहां 12वीं पास बच्चों को प्रवेश देता है। वर्तमान में यहां पर 75 बच्चे हैं जिसमें 38 लड़कियां और 37 लड़के अध्ययन कर रहे हैं। ये सभी छात्र विभिन्न राज्यों के नवोदय विद्यालयों से हैं। दिन में तीन बार गुरुकुल में होने वाली प्रार्थना में विद्यार्थियों को जो संकल्प और लक्ष्य का भान कराया जाता है, वह वाकई अनूठा है।

मंदिर आधारित आधुनिक शिक्षा

बेंगलुरू स्थित नित्यानंद गुरुकुलम् में बच्चों को 'आगम शास्त्र' की शिक्षा दी जाती है। इसके अलावा यहां के बच्चे मंदिर की देखरेख में रहते हैं। खास बात यह है कि यहां के बच्चे पारंपरिक शिक्षा के अलावा कैंब्रिज विश्वविद्यालय से संबंद्ध आईजीसीएससी पाठ्यक्रम से आधुनिक शिक्षा लेते हैं। गुरुकुल से जुड़ी विष्णु प्रिया बताती हैं, ''हमारे यहां के बच्चे सामान्य बच्चों की तुलना में काफी अधिक बुद्धिमान हैं। यहां उनका मानसिक विकास तेजी से होता है। आगम शास्त्र में लगभग 463 शक्तियों का वर्णन है। गुरुकुल के बच्चे आज लगभग 60 से अधिक शक्तियों को जानते हैं। इसमें प्रमुख रूप से आंख बंद करके पढ़ना, 'बॉडी स्कैनिंग',योगकला जैसी विद्याएं शामिल हैं।''

श्रीमद्‌भगवद् गीता के अनुसार जीवन

वडोदरा स्थित इस्कॉन के कुछ गृहस्थ भक्तों ने 2008 में अपने बच्चों को स्कूल के बजाय अपने घरों में पढ़ाना शुरू किया। जब यह कार्य सफल रहा तो उन्होंने 2012 में अवंति गुरुकुलम् की स्थापना की। इस समय यहां 40 बच्चे हैं और इन बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार पढ़ाया जाता है। इसके अलावा उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया जाता है।

यह बात सत्य है कि इस सम्मेलन ने गुरुकुल व्यवस्था से जुड़े लोगों को ऊर्जा देने का काम किया, लेकिन संचालकों के सामने यह अहम सवाल खड़ा था कि मौजूदा समय के साथ गुरुकुल कैसे कदम से कदम मिलाकर चलें ताकि इनका जो उद्देश्य है वह पूरा हो सके। इसके बारे में स्वामी गोविंद देव गिरि जी दो बिन्दुओं पर जोर देते हैं। वे कहते हैं,''इस समय यह जानने की जरूरत है कि जो गुरुकुल अध्ययन देने का काम कर रहे हैं उनकी स्थिति क्या है? फिर

समरसता गुरुकुलम् की छात्राएं संचालक श्री गिरीश प्रभुणे के साथ

गुरुकुलों को विस्तार देना है इनका लक्ष्य

म्यांमार से श्री विष्णु बल्लभानंद सरस्वती

भूटान के श्री के.पी.शर्मा

सम्मेलन में नेपाल से आए प्रतिनिधि।(सबसे दाएं) श्री राम अधिकारी

सम्मेलन में म्यांमार से स्वामी विष्णु बल्लभानंद सरस्वती आए थे जो उत्तर म्यांमार में रामेश्वर गुरुकुल के प्रधानाचार्य हैं। रामेश्वर गुरुकुल म्यांमार में सबसे बड़ा है। मूल रूप से उत्तराखंड के गढ़वाल के निवासी स्वामी विष्णु बल्लभानंद सरस्वती बताते हैं,''मैंने भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में 19 वर्ष से अधिक समय तक वेद-वेदांग का अध्ययन किया और 2009 में मैं म्यांमार आ गया।

मैंने समाज के सहयोग से रामेश्वर गुरुकुल के छात्रों के लिए छात्रावास, पुस्तकालय, भवन आदि का निर्माण कार्य कराया है।'' दरअसल म्यांमार में रामेश्वर के अलावा 3 और गुरुकुल हैं। राधाकृष्ण दक्षिण म्यांमार में है, पूर्व में मखांती और सरस्वती गुरुकुल। इन सभी गुरुकुलों में बच्चों को वेद-वेदांग का अध्ययन कराया जाता है। वे कहते हैं कि हमारा प्रयास म्यांमार में गुरुकुलों का विस्तार करना है। इसके अलावा सम्मेलन में भूटान, नेपाल, इंडोनेशिया के भी प्रतिनिधि आए हुए थे। भूटान से आए के.पी.शर्मा, जो चिरांग जिले के निवासी हैं और हिन्दू धर्म समुदाय के जिला उपाध्यक्ष हैं, बताते हैं,''हमारे यहां एक भी गुरुकुल नहीं है। इसलिए हम लोग अपने यहां गुरुकुल शुरू करना चाहते हैं। क्योंकि हमारे यहां के लोगों को पारंपरिक शिक्षा लेने के लिए भारत आना पड़ता है। अगर यह शिक्षा उन्हें भूटान में ही मिल जाए तो बड़ा अच्छा होगा।''

सम्मेलन में नेपाल से आए नेपाल शिक्षा परिषद के संयोजक श्री राम अधिकारी ने बताया कि यहां 95 प्रतिनिधि आए हुए हैं। वर्तमान में नेपाल में लगभग 225 गुरुकुल पंजीकृत हैं और सरकार भी उन्हें मदद करती है। हमारे यहां का स्वर्गदारी गुरुकुल लगभग 125 वर्ष पुराना है। इसी तरह कुछ और गुरुकुल हैं जो 130 वर्ष से भी अधिक पुराने हैं और आज भी चल रहे हैं।''

एक योजना बनाकर उन्हें समाज और सरकार के स्तर पर कैसे मजबूत किया जा सकता है। दूसरा, सीएसआर फंड में भी गुरुकुलों को प्राथमिकता देनी चाहिए। साथ ही सरकार की ओर से अच्छे गुरुकुलों को सम्मानित किया जाना चाहिए। इससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और इनके संचालक तेजी के साथ इस क्षेत्र में कार्य करेंगे।'' बेंगलुरू स्थित स्वामी विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान के कुलपति डॉ. रामचंद्र भट्ट कहते हैं कि गुरुकुल में विद्वान आचार्यों की जरूरत है, तभी यहां से अच्छे छात्र निकलेंगे।

उल्लेखनीय है कि इस तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत ने किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा सिर्फ आजीविका के लिए नहीं, जीवन के लिए भी शिक्षा आवश्यक है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति में समय के अनुसार क्या परिवर्तन होने चाहिए, इस ओर भी हमें सोचना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि भारत में शिक्षा वृत्ति रही है। हमारे यहां यह उत्तरदायित्व है कि व्यक्ति ज्ञान लेने के बाद उसे दूसरों को भी प्रदान करता है। इसी कारण से सैकड़ों आक्रमणों और षड्यंत्रों के बाद भी आज गुरुकुल चल रहे हैं। एक सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रा.स्व.संघ के सरकार्यवाह श्री भैयाजी जोशी ने कहा कि गुरुकुल को केवल आवासीय विद्यालय नहीं कह सकते। यह परंपरा समग्र रूप से जीवन में संस्कार भरने का काम करती है। सहसरकार्यवाह श्री सुरेश सोनी ने कहा कि आज के समय संस्कार युक्त शिक्षा होनी चाहिए, जो मनुष्य के जीवन को आदर्श बनाए। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि भारत में प्राचीन काल से गौरवशाली शिक्षा का इतिहास रहा है। आज हमें उस गौरवशाली शिक्षा परंपरा को आधुनिक शिक्षा पद्धति में शामिल करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रदेश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की जाएगी। इसे औपचारिक शिक्षा के समकक्ष माना जाएगा।

बहरहाल अन्तरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन ने उन तमाम लोगों को ऊर्जा देने का काम किया है जो दृढ़ संकल्प के साथ इस क्षेत्र में लगे हुए हैं। लेकिन यह तपस्या तभी सार्थक होगी जब समाज और अविभावकों की इस क्षेत्र में सहभागिता बढ़ेगी। ■

दैनिक भास्कर दिनांक : ३०-०४-२०१८

अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई छोड़ चुना गुरुकुल

विद्यार्थी बोले- यहां होमवर्क नहीं, घर जैसे वातावरण में मिलती है संपूर्ण शिक्षा

भास्कर संवाददाता | उज्जैन

गुरुकुल परंपरा आधारित शिक्षा को फिर से स्थापित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शहर में गुरुकुल सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। देशभर के कई गुरुकुल से इसमें कई ऐसे विद्यार्थी भी शामिल हुए हैं, जिन्होंने अंग्रेजी मीडियम की पढ़ाई छोड़कर गुरुकुल में शिक्षा लेना शुरू की है। अंग्रेजी विद्यालयों को छोड़कर गुरुकुल में शामिल हुए इन विद्यार्थियों का कहना है कि यहां होमवर्क का तनाव नहीं रहता और घर जैसे वातावरण में समग्र विकास पर आधारित शिक्षा दी जाती है।

सितार वादन के साथ चित्रकला

कडलू (तमिलनाडु) का 9 वर्षीय देवांश गुरुकुल परंपरा आधारित शिक्षा ग्रहण कर रहा है। देवांश ने बताया उसने तीसरी कक्षा तक अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पढ़ाई की। देवांश यहां वैदिक गणित के अलावा सितार वादन और चित्रकला की शिक्षा भी ले रहा है।

पढ़ाई के साथ सारंगी वादन

चेन्नई का 15 वर्षीय सौरभ के. भी गुरुकुल परंपरा आधारित शिक्षा ले रहा है। सौरभ ने बताया कि वह 9वीं कक्षा तक अंग्रेजी मीडियम में पढ़ा यहां सभी कार्य करते हैं, जिससे हमारा समग्र विकास हो पा रहा है। पढ़ाई के साथ चित्रकला और सारंगी वादन भी करते हैं।

वैदिक गणित के अभ्यास से जटिल सवालों के देते मिनटों में जवाब

चेन्नई का 10 साल का पुण्य कमल जैन पिछले एक वर्ष से साबरमती गुरुकुलम् में पढ़ रहा है। वह चौथी कक्षा तक चेन्नई के ही स्कूल में अंग्रेजी मीडियम में पढ़ा। इसके बाद परिजनों के कहने पर वह गुरुकुल में दाखिल हो गया। वैदिक गणित का अध्ययन कर रहे पुण्य की खासियत यह है कि वह गुणा-भाग, जोड़-घटाव के कठिन सवालों को मिनटों में मौखिक ही हल कर देता है।

हरियाणा सरकार का महत्त्व पूर्ण निर्णय

निःशुल्क शिक्षा देने वाले गुरुकुलों को मुफ्त जमीन

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ●

मुख्यमंत्री बोले, ऐसे गुरुकुल के लिए शिक्षकों सहित अन्य जरूरी प्रबंध करवाने में भी सहयोग किया जाएगा

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़ : हरियाणा सरकार मूल्य आधारित प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देगी। इसके लिए मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने बच्चों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करने वाले गुरुकुलों को मुफ्त भूमि मुहैया कराने का निर्णय लिया है। सरकार ऐसे गुरुकुल चलाने के लिए शिक्षकों सहित सभी अन्य आवश्यक प्रबंध कराने में भी सहयोग देगी। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने यह घोषणा पंचनद शोध संस्थान चंडीगढ़ द्वारा 'वर्तमान युग में गुरुकुल प्रणाली की प्रासंगिकता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में की। उन्होंने कहा कि नैतिक मूल्यों, योग एवं देशभक्ति को शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाया जाना चाहिए ताकि बच्चों का समग्र विकास हो सके।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मुकुल कानितकर ने कहा कि वर्तमान में देश में 4000 से अधिक गुरुकुल काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने शिक्षा प्रणाली में बदलाव के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि राज्य के बजट का एक बड़ा हिस्सा बच्चों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करने पर खर्च किया जा रहा है। अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने प्रो. बीके कुठियाला की अध्यक्षता में 21 सदस्यीय राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद भी गठित की है।

मुख्यमंत्री ने सरकारी विद्यालयों में पहली से आठवीं कक्षा तक के लिए नो डिटेंशन पालिसी (किसी को फेल नहीं करना) को समाप्त करने की वकालत करते हुए कहा कि इस प्रणाली ने विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। इस वर्ष गीता जयंती समारोह के कार्यक्रम मॉरीशस और यूनाइटेड किंगडम (इंग्लैंड) में भी आयोजित किए जाएंगे। इस संबंध में दोनों देशों से निमंत्रण प्राप्त हुए हैं। पीजीआइएमइआर चंडीगढ़ के निदेशक डा. जगत राम ने गुरुकुल शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली बताया। पंचनद शोध संस्थान के निदेशक प्रो. बीके कुठियाला और कार्यकारी अध्यक्ष डा. कृष्ण आर्य ने गुरुकुल शिक्षा की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

दिव्य हिमाचल

बृहस्पतिवार दिनांक : ०८/०८/२०१८

गुरुकुलों को मुफ्त जमीन

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर का ऐलान, निःशुल्क देनी होगी शिक्षा

■ निजी संवाददाता, चंडीगढ़

हरियाणा में प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने वाले गुरुकुलों को मुफ्त भूमि मुहैया करवाएगी।

सरकार ऐसे गुरुकुल को चलाने के लिए शिक्षकों सहित सभी अन्य आवश्यक प्रबंध करवाने में भी सहायता करेगी। मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर पंचनाद शोध संस्थान, चंडीगढ़ की ओर से 'वर्तमान युग में गुरुकुल प्रणाली की प्रासंगिकता' विषय पर आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

बच्चों को त्याग और समर्पण पर आधारित शिक्षा प्रदान करने में गुरुकुल के महत्त्व को रेखांकित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि केवल पढ़ने, लिखने और अंकगणित की 3आर शिक्षा तक सीमित करने के बजाय, नैतिक मूल्यों, योग एवं देशभक्ति को शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाया जाना चाहिए ताकि बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके।

उनके अनुसार प्राचीन प्रणाली के अनुसार, हमारे समाज में स्वास्थ्य और शिक्षा की निःशुल्क सुविधा प्रदान करना नैतिक जिम्मेदारी थी, लेकिन दुर्भाग्यवश आजकल एक तरफ आम आदमी के पास इन सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त संसाधनों की कमी है, वहीं दूसरी ओर साधन-संपन्न या अमीर लोग ऐसी सुविधाओं के लिए अत्यधिक धन खर्च कर रहे हैं। उनके अनुसार राज्य सरकार ने शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए कई कदम उठाए हैं। राज्य के बजट का एक बड़ा हिस्सा बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने पर खर्च किया जाता है। राज्य सरकार ने प्रोफेसर बीके कुठियाला की अध्यक्षता में 21 सदस्यीय राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद भी गठित किया है। उन्होंने विद्यालयों में पहली से आठवीं कक्षा के लिए नो डिटेंशन पालिसी को समाप्त करने की वकालत करते हुए कहा कि इस प्रणाली ने विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है, क्योंकि उन्हें परीक्षाओं में विफल होने का कोई डर नहीं रहता है। उन्होंने कहा कि हरियाणा ने विभिन्न क्षेत्रों में दुनियाभर में अपनी पहचान बनाई है।

दिव्य हिमाचल Wed, 08 August 2018
epaper.divyahimachal.com/c/31041905

नवगुजरात समय दिनांक : १७-१०-२०१४ पाना नं. १५

पश्चिमी शिक्षण से भारतीय संस्कृति को नुकशान : राजनाथ

हमारी संस्कृति निर्जीव के लिए भी सोचती है।

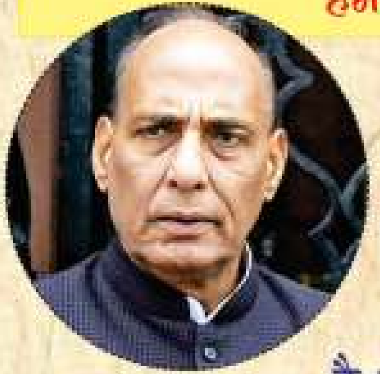

केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा की ब्रिटीशरों ने भारत में पश्चिमी जगत की शिक्षा लाकर भारतीय संस्कृति और मूल्यों को गंभीर नुकशान पहुंचाया है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य 'व्यक्ति का सर्वांगीण विकास' करने का है। लेकिन वर्तमान शिक्षा प्रणाली यह उद्देश्य पूर्ण नहीं करती और इसके आधार पे ही भारत को पूरा विश्व देख रहा है। उन्होंने कहां सिर्फ भारतीय संस्कृति और मूल्य ही इतने समृद्ध और पवित्र है की जो केवल मनुष्य जाति के लिए ही नहीं, लेकिन पृथ्वी पर की निर्जीव चीजों के बारे में भी सोचते है।

उन्होंने कहा की पश्चिमी शिक्षा का मॉडेल पेश कर के जिस बद इरादों को पूर्ण कर रहे है उसे पहचान लेने की जरूरत है।

संदेश २८-०९-२०१८ अहमदाबाद

अंग्रेज़ो की शिक्षा प्रणाली क्लर्क पेदा करती है : अमित शाह

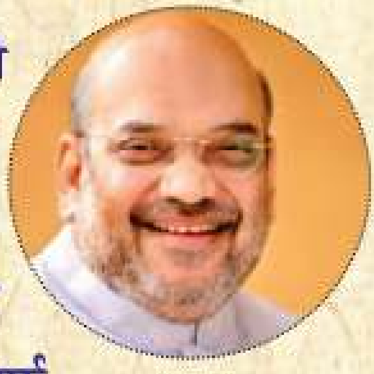

भाजप के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने कहा की हमारी शिक्षा प्रणाली को भारतीय संस्कृति के अनुरूप बनाने की जरूरत है।

गुलामीकाल में अंग्रेजोंने भारतीय धर्मस्थानकों पर हमला करके शिक्षा व्यवस्था को एसी बना दी थी जो सिर्फ क्लर्क बनाती है।

दिनांक २९-९-१८ के दिन दिल्ली में आयोजित
The conference on Academic Leadership on Education for resurgence में
भारतीय शिक्षण मंडल के माननीय अध्यक्ष श्री डॉ. सच्चिदानन्द जोषीजी के उद्‌बोधन के अंश

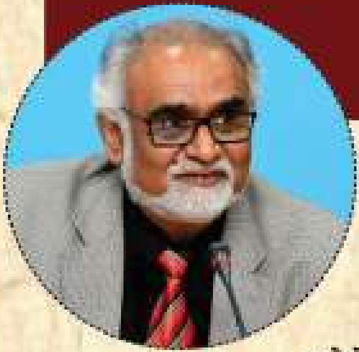

भारत ने प्राचीन काल में समुचे विश्व को विश्व गुरु के रूप में शिक्षा एवं दिक्षा प्रदान कि है।

भारत के विश्वविद्यालय तथा गुरुकुल शिक्षा के ऐसे केन्द्र थे, जहां विश्व के कोने, कोने से विद्यार्थी एवं शोधार्थी आकर शिक्षा प्राप्त करते थे, प्राचीन भारत में एसे कई महान विद्वान हुए जिन्होंने समूचे विश्व को ज्ञान तथा विज्ञान के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण आविष्कार दिए।

लेकिन कुछ १०० वर्षों कि गुलामी तथा भारतीय समाज को खण्ड-खण्ड मे विभाजित कर देने वाली ब्रिटिश हुकुमत की मानसिकता ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को इतना करारा आघात किया उससे उभरने के लिए हम अभी भी संघर्ष रत दिखाई देते हैं। इस का प्रमुख कारण यह है, कि हमने हमारी शिक्षा व्यवस्था मे भारतीय चिन्तन एवं दर्शन का समावेश उस तरह नही किया जैसा हमे करना चाहिये था।

विकास की कोई भी अवधारणा अथवा उत्थान का कोई भी संकल्प एक सुविचारित, सुसंस्कारित एवं सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली के बिना सम्भव नहीं है।

हम नौकरी माँगने वाले निर्मित करने के बजाय नौकरी देने वालो का विकास कैसे किया जाय उसका हम मंथन करे।

हमारी शिक्षा को नैतिक मूल्य से प्रेरित और राष्ट्र निर्माण कि भावना से ओतप्रोत बनाने के बजाय सिर्फ उपभोक्तावादी आत्मकेन्द्री बनाने की ओर अग्रसर हो गई हैं। हमारे शास्त्रों में हमे बताया है कि विद्या हमारे लिए सबसे बडा धन हैं, सबसे बडी संपत्ति हैं। जिस देश के पास ज्ञान व विद्या के रुप में इतनी बडी संपदा हो, और जिस देश का दर्शन इतना व्यापक और उदात्त हो और जिस देश के पास ऐसा सक्षम नेतृत्व हो उसे इस समूचे विश्व का बौद्धिक एवं नैतिक नेतृत्व से कौन रोक सकता है।

आइये हम सब मिलकर संकल्प करे कि हम सब हमारी सबसे बडी संपदा को पुन: समाज मे शीर्ष स्थान पर पहुचाने का प्रयास करे। एक बार पुन: माननीय प्रधानमंत्री और साथ ही आप सभी का स्वागत हैं।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि आज हम सब लोग भारतीय शिक्षा के पुनरुत्थान के लिए संकल्पित होकर चर्चा करने हेतु यहाँ एकत्रित हुए है।

दिनांक २९-९-१८ के दिन दिल्ली में आयोजित

The conference on Academic Leadership on Education for resurgence में

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी के उद्‌बोधन के अंश

में आपका ध्यान अपने देश के पुरातन गौरवशाली परम्परा की और भी ले जाना चाहता हूँ। हमारी संस्कृति का आधार स्तम्भं वेद है, आप सभी इस बात को जानते है, कि वेद संस्कृत भाषा के ''विद'' शब्द से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ ज्ञान, ग्रंथ है। इसी विद् से विद्या शब्द विकसित हुआ है। यानि ज्ञान के बिना हमारे समाज, हमारे देश और तो और हमारे जीवन के आधार की कल्पना कतई नही कि जा सकती है।

ज्ञान और शिक्षा सिर्फ किताबे नहीं हो सकती है।

शिक्षा का मकसद, व्यक्ति के हर आयाम को संतुलित विकास करने का है।

प्राचीन तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, जैसे विश्वविद्यालयो मे ज्ञान के साथ Innovation पर भी जोर दिया जाता था। तभी तो एसे विद्या के मन्दिरो से आचार्य चाणक्य, आर्यभट्ट, पाणिनि, श्ववंतरी, चरक, सुश्रूत, अनगिनत-अनगिनत विद्वान उससे निकले थे। अगर उन्होंने सिर्फ किताबी ज्ञान को पर्याप्त मान लिया होता तो क्या दुनिया को राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, खगोल विज्ञान, शल्यचिकित्सा, गणित और व्याकरण के नियम मिल पाते क्या?

चरित्रहीन व विनयहीन सुशिक्षित व्यक्ति पशु से अधिक खतरनाक होता है।

शिक्षा से अधिक महत्व चरित्र का है।

शिक्षा व्यवस्था का स्वरुप एसा हो जो व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सके।

शिक्षा का अगर सही लक्ष्य न हो तो वह खूटी पर लटके हुए सर्टिफिकेट से ज्यादा और कुछ नहीं होता है।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा भोपाल में आयोजित महर्षि वेद-व्यास राष्ट्रीय सम्मान के अवसर पर साबरमती गुरुकुलम् के संस्थापक कुलपति श्री उत्तमभाई जवानमलजी शाह के संदेश की प्रस्तुति कर रहे संचालक श्री अखिल उत्तमभाई शाह

माननीय मुख्यमंत्रीश्री, पदाधिकारी गण एवं उपस्थित सभी संस्कृति प्रेमियों को सादर नमस्कार।

साबरमती गुरुकुलम् के संस्थापक कुलपति मेरे पूज्य पिता श्री उत्तमभाई शाह ने 25 वर्ष पूर्व अपने व अपने भाईओं की संतानों को आधुनिक मैकाले शिक्षा से मुक्त कराकर अपने ही घर में गुरुकुल शिक्षा पद्धति कि नींव रखकर विपरीत धारा की ओर चुनौती भरा कदम उठाया था। जिसका जीवंत उदाहरण में स्वयं आपके सन्मुख आज पूज्य पिताश्री का संदेश लेकर प्रस्तुत हुआ हूँ। इस पावन बेला पर वे अस्वस्थ होने के कारण उपस्थित नहीं हो पाए है। परंतु वे बहुत ही हर्षित है की भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन मंत्री माननीय श्री मुकुल कानिटकरजी के सक्रिय प्रयास से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुन:स्थापन के कार्य ने युग क्रांति एवं एक आंदोलन का स्वरूप ले लिया हैं जो देश के भविष्य को एक नया शिखर प्रदान करेगा। इसी क्रम में हाल ही में हरियाणा सरकारने भारतीय परंपरा की शिक्षा देने वाले गुरुकुलों को मुफ्त में जमीन देने की घोषणा की है। जो सभी राज्य सरकारों के लिए अनुकरणीय हैं।

मंचस्थ महानुभावों के साथ साबरमती गुरुकुलम् के संचालक श्री अखिल उत्तमभाई शाह

अपनी विलक्षण शिक्षा पद्धति के बलबूते पर ही भारत ने असंख्य वर्षों तक विश्व का नेतृत्व किया है। तदुपरांत उद्योग-व्यवसाय, कला-कौशल्य, ज्ञान-विज्ञान और शिक्षा-संस्कृति के क्षेत्र में भी वह अग्रगण्य रहा है।

भारतीय ऋषियों ने पदार्थ की रचना का विश्लेषण किया और आत्मतत्त्व का भी साक्षात्कार किया। भारतीय शिक्षा का वटवृक्ष उन्होंने धर्म, नीति और ज्ञान के खाद और जल से सींचा था। इसलिए ही तत्कालीन समाज धार्मिक, नीतिमान्, बुद्धिमान, सामर्थ्यवान, सुखी एवं समृद्ध बन सका था। ऐसी शिक्षा पद्धति के विकसित उदाहरण थे; विश्वप्रसिद्ध नालन्दा और तक्षशिला जैसे विश्व विद्यालय ! लेकिन इस महान् भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणकारो का कुठाराघात सहना पड़ा।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री
श्री शिवराजसिंहजी चौहाण से वार्तालाप

ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किए बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असम्भव है। अतः इस परम्परा को पुनः प्रस्थापित करना अनिवार्य है। तभी, मेकोले-शिक्षा के दुष्प्रभाव से हम भारत को बचा पाएंगे।

हमारे लिए आनंद का विषय है की मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंहजी चौहाण कि सरकारने उज्जैन स्थित सांदीपनी वेदविद्या प्रतिष्ठान में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी की उपस्थिति में त्रि-दिवसीय आंतरराष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन का

आयोजन करके गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुन: प्रतिष्ठान के कार्य में एतिहासिक और महत्व पूर्ण कदम उठाया हैं। गुरुकुल शिक्षा के विषय में संस्कृति मंत्रालय के माननीय सचिव मनोज श्रीवास्तवजी का कार्य भी अत्यंत सराहनीय हैं।

साबरमती गुरुकुलम् के संचालक श्री अखिलभाई का स्वागत कर रहे मध्यप्रदेश के संस्कृति मंत्रालय मा. सचिव मनोजजी श्रीवास्तव

इस दिव्य गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में ही भारत का स्वर्णीम भविष्य निहित है और इस की सफलता का श्रेय उन सभी ऋषिमुनियों को ही जाता हैं जिनके मार्गदर्शन में हम चलने का प्रयास कर रहे हैं। भारत की महान ऋषि संस्कृति से नि:सृत इस गुरुकुल शिक्षा-पद्धति के कारण ही हमारा राष्ट्र कभी जगतगुरु हुआ करता था और आगे भी भारत उस प्रतिष्ठा को तभी प्राप्त करेगा जब वही शिक्षा पद्धति देश भरमें पुन: स्थापित होगी।

अत: आज का यह सम्मान हम उन्हीं ऋषिमुनियों के पुनित चरणों में समर्पित करते हैं

और हृदय तल से यह कामना करते हैं कि भारतीय ऋषिपरंपरा पुन: प्रस्थापित हो और देश के प्रत्येक बालक को गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से अभ्यास करने का सौभाग्य मिले।

आओ हम इतिहास बनाए
एक नया विश्वास जगाए
गुरुकुल शिक्षा को अपनाकर
भारत को फिर से विश्वगुरु बनाए...

ऋषिकालीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के इस गौरवपूर्ण सम्मान के लिए हम मध्यप्रदेश सरकार, संस्कृति विभाग एवं सभी सहयोगीयों का आभार व्यक्त करते हैं।

अहमदाबाद स्थित हमारे साबरमती गुरुकुलम् में पधारने हेतु हम आप सभी को सादर आमंत्रित करते हैं। अस्तु... धन्यवाद... भारत माता की जय...

संपर्क सूत्र

मुंबई

विजयभाई बाबुलालजी शाह
जे.बी एन्ड ब्रधर्स प्रा.लि.
भारत डायमंड बुर्स FC-3011/12, तीसरी मंजील
ब्रान्द्रा कुर्ला कोम्पलेक्ष, ब्रान्द्रा (पूर्व) - मुंबई 400 051
(022) 40342222, 9920231848

सुरत

राजेशभाई दलपतभाई शाह
स्टार रेईस
शिवम चेम्बर्स, खांड बाजार वराछा रोड,
सुरत - 395006
(0261) - 255 4444, 9824101711

मुंबई

मुकेशभाई बाबुलालजी जैन
मल्टी ग्राफिक्स
वर्धमान बिल्डींग कोटाची बाडी, बी.पी. रोड
मुंबई - 4
(022) - 23884222, 9322232504

चेन्नई

विमलचंदजी त्रिकमचंदजी तलावत
तलावट एन्टरप्राईझ
10, नारायण मुडालीलेन चैन्नई-79
(044) - 25387136, 9790747421

बरोडा

भरतकुमार मनसुखलाल शाह
102, आगम फ्लेट,
मेहुल जैन सोसोयटी के पास
सुभानपुरा, वडोदरा - ३९००२३
(0265) - 2291544, 93750 99975

॥ साबरमती गुरुकुलम् ॥

संचालक - अखिलभाई उत्तमभाई शाह - 7874846715
सह संचालक - जितेन्द्रभाई खुशालचंदजी बालड - 7990764179
हीरा जैन सोसायटी के पास, रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद-५
फोन : 9898099066, 8866020402, (079) 27501944
/gurukulamshiksha +91-7046435144 gurukulamshiksha
www.gurukulamshiksha.org info@gurukulamshiksha.org

साबरमती गुरुकलम् को राष्ट्रीय सन्मान से सन्मानित करने के विषय में मध्यप्रदेश के संस्कृति मंत्रालय के प्रमुख सचिव मनोजजी श्रीवास्तवका पत्र

स्वराज संस्थान संचालनालय
मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग
रवीन्द्र भवन परिसर, भोपाल
फोन : 2660563 / 2660407 फैक्स : 2660361
email : swarajbhavan@gmail.com

मनोज श्रीवास्तव आय.ए.एस.
प्रमुख सचिव, संस्कृति विभाग
आयुक्त–सह–संचालक

क्रमांक : 198 / स्व.सं. / 2018
दिनांक : 31 / 5 / 2018

आ. श्री उत्तम भाई,

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठतम उपलब्धियों एवं योगदान को सम्मानित करने के उद्देश्य से **महर्षि वेद व्यास राष्ट्रीय सम्मान** (राशि रुपये 2.00 लाख) स्थापित किया गया है।

यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राज्य शासन द्वारा गठित उच्च स्तरीय समिति ने विद्यार्थियों को तत्वज्ञान, प्रभुभक्ति के संस्कार, आयुर्वेद, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, न्याय शास्त्र, नीति शास्त्र, वास्तु शास्त्र के साथ–साथ विभिन्न भाषाओं के ज्ञान, संस्कृति, योग, खेल के क्षेत्र में शिक्षा के साथ ही राष्ट्र निर्माण में उल्लेखनीय योगदान के लिए **महर्षि वेदव्यास राष्ट्रीय सम्मान 2017–18** से **हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम)** साबरमती को सम्मानित किये जाने का निर्णय लिया है।

महर्षि वेदव्यास राष्ट्रीय सम्मान अंतर्गत राशि रुपये 2.00 लाख की सम्मान निधि, प्रशस्ति एवं सम्मान पट्टिका प्रदान की जायेगी। अलंकरण समारोह आगामी 15 अगस्त,2018 को सांय 7.00 बजे रवीन्द्र भवन, भोपाल में आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

कृपया अपनी सहमति से अवगत कराते हुए अलंकरण समारोह में उपस्थिति का अनुरोध है । कृपया ब्रोशर में प्रकाशन के लिए संस्था से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी एवं गतिविधियों के फोटोग्राफ भी भिजवाएं।

सादर।

(मनोज श्रीवास्तव)

प्रति,
श्री उत्तम भाई,
सचिव,
हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम)
हीरा जैन सोसायटी के पास, रामनगर
साबरमती (गुजरात) –380005
98980–99066

साबरमती गुरुकुलम् को राष्ट्रीय सम्मान

महर्षि वेद व्यास
राष्ट्रीय सम्मान
2017-18

भारतीय आर्य परम्परा के अनुरूप
मूल्य आधारित गुरुकुल शिक्षा पद्धति की
पुनर्स्थापना एवं भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित कर
सक्षम एवं सुयोग्य बनाने में
अप्रतिम योगदान के लिए

हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम)
साबरमती को

महर्षि वेदव्यास राष्ट्रीय सम्मान
2017-18
(राशि रुपये 2.00 लाख) से
सादर विभूषित करते हैं।

मध्यप्रदेश शासन
संस्कृति विभाग

साबरमती गुरुकुलम् को राष्ट्रीय सन्मान

शिक्षा के साथ राष्ट्र निर्माण के कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान
देने और भारतीय आर्य परंपरा के अनुरुप मूल्य आधारीत
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की पुन:स्थापना और भावी पीढ़ी को सुसंस्कारीत,
सक्षम और सुयोग्य बनाने मे अप्रतिम योगदान बदल मध्यप्रदेश
सरकार द्वारा दि. १५-८-२०१८ के दिन भोपाल मे

साबरमती गुरुकुलम् को

महर्षि वेद व्यास राष्ट्रीय सन्मान

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंहजी चौहान द्वारा
साबरमती गुरुकुलम् के संचालक श्री अखिल उत्तमभाई शाह का सन्मान